Translation of the Additional Mantras in the *ĀśvS.*

Sūkta I.191

१. मा बिभेर्न मरिष्यसि परि त्वा पामि सर्वतः।
घृणेन हन्मि वृश्चिकमहिं दण्डेनागतम्॥ १७॥*

Do not be afraid of being bitten; you will not die. I protect you from all sides. I kill with weapon the scorpion (*vṛścika*) and with stick the serpent who have come here.

डरो मत तुम नहीं मरोगे, तुम्हारी चारों तरफ से रक्षा करता हूँ। बिच्छु को कठोर पत्थर से मारता हूँ, (तथा) आये हुये सर्प को डण्डे से मारता हूँ।

२. आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च।
गरुळपक्षनिपातेन भूमिं गच्छ महायशाः॥ १८॥*

You, the possessor of great glory, go to the earth with the speed of the chariot of the Sun; with the power of the hands of Viṣṇu and with flapping of wings of Garuḍa.

महान् यशस्वी (तुम) सूर्य के रथ की वेग से, विष्णु की भुजाओं के बल से तथा गरुड के पंख के गिरने की शीघ्र गति से भूमि पर जाओ।

३. गरुळस्य जातमात्रेण त्रयो लोकाः प्रकम्पिताः।
प्रकम्पिता मही सर्वा सशैलवनकानना॥ १९॥*

The three regions trembled verily with the birth of Garuḍa; the entire earth quivered along with all the mountains, the forests, and the gardens.

गरुड के उत्पन्न होने मात्र से तीनों लोक प्रकम्पित हो गये, सम्पूर्ण महती पृथिवी पर्वत, जंगल तथा उपवनों सहित प्रकम्पित हो गई।

४. गगनं नष्टचन्द्रार्कं ज्योतिषं न प्र काशते।
देवता भयभीताश्च मारुतो न प्लवायति मारुतो न प्लवायत्यों नमः॥ २०॥*[१७]

The sky (became) bereft of the moon and the sun; the luminous world does not shine; the gods became terrified; the wind does not blow; the wind does not blow. A Salute to (that state of existence).

चन्द्र और सूर्य के प्रकाश से रहित आकाश प्रकाशित नहीं हो रहा है, देवता भयभीत हो गये हैं, प्रचण्ड मरुद्गण भी प्रवाहित नहीं हो रहे हैं; प्रचण्ड मरुद्गण भी प्रकाशित नहीं हो रहे हैं। (उस अवस्था को) मैं नमस्कार करता हूँ।

५. भोः सर्प भद्र भद्रं ते दूरं गच्छ महायशाः।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर॥ २१॥*

O gentle serpent, good be to you; (you) the possessor of great glory, (please) do go away; you remember the words of Āstīka Muni, (uttered) at the end of (Serpent)-sacrifice of Janamejaya.

कल्याणकारी सर्प, तुम्हारा कल्याण होवे; महान् यशस्वी तुम दूर चले जाओ। जनमेजय के सर्पयज्ञ के अन्त में कहे गये आस्तीकमुनि के वचन का स्मरण करो।

६. आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते।
शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा॥ २२॥*

The serpent, who having heard the name of Āstīka Muni, does not go back, his head is broken into hundreds of pieces like the fruit of *śiṁśa* (*śiṁśapa*) tree.

आस्तीकमुनि के वचन को सुनकर जो सर्प वापस नहीं लौट जाता, उसका शिर शिंशवृक्ष के फल की तरह सैकड़ों भागों में खण्डित हो जाता है।

७. यो जरत्कारुणा जातो रंजेत् कन्यां महायशाः।
तस्य सर्पाप भद्रं ते दूरं गच्छ महायशाः॥ २३॥*

He, who is born of Jaratkāru, and (who) is possessor of high glory, if he bites a girl, O serpent, you, as such, would be deprived of welfare (so, you), the possessor of high glory, go afar.

जो जरत्कारु से उत्पन्न हुआ है तथा जो महान् यशस्वी है, वह (यदि) कन्या को डसता है, ऐसे तुम्हारा कल्याण तुमसे अलग हो जायेगा। (इसलिये) महान् यश वाले तुम दूर चले जाओ।

८. असितिं चार्थसिद्धिं च सुनीतिं चापि यः स्मरेत्।
दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्ति सर्पभयं हरेत्॥ २४॥*

Whosoever remembers Asiti, Arthasiddhi and Sunīti by day or night, there is no fear to him of a serpent.

जो कोई (व्यक्ति) असिति, अर्थसिद्धि तथा सुनीति का स्मरण दिन में या रात्रि में करता है, उसको सर्प का भय नहीं हो सकता।

९. अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महामुनिः।
कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः॥ २५॥*

Agasti, Mādhava, Mahāmuni, Mucukunda, Kapilamuni and Āstika, these five have happy sleep.

अगस्ति, माधव, महामुनि मुचुकुन्दु, कपिलमुनि और आस्तीक ये पाँच सर्वदा सुखपूर्वक सोने वाले हैं।

१०. नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि।
नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥ २६॥*

Salutation (be) to the Narmadā in the morning; salutation (be) to the Narmadā in the night. O Narmadā, salutation be to you; protect me from the poison of the serpent.

नर्मदा को प्रातःकाल नमस्कार करता हूँ; नर्मदा को रात्रिकाल में नमस्कार करता हूँ। (इसलिये) हे नर्मदे, तुम्हारे लिये मेरा सदा नमस्कार हो; विषैले सर्प से (तुम) मेरी रक्षा करो।

Sūkta II.44

११. भद्रं वद दक्षिणतो भद्रमुत्तरतो वद।
भद्रं पुरस्तान्नो वद भद्रं पश्चात्कपिञ्जल॥ १॥*

O Kapiñjala, speak auspicious words from the south; speak auspicious words from the north; speak auspicious words from the fore, and speak auspicious words from the back.

हे कपिञ्जल, दक्षिण की ओर से कल्याणकारी शुभ शब्द बोलो, उत्तर की ओर से कल्याणकारी शुभ शब्द बोलो, तथा पीछे से कल्याणकारी शुभ शब्द बोलो।

१२. भद्रं वद पुत्रैर्भद्रं वद गृहेषु च। भद्रमस्माकं वद भद्रं नो अभयं वद॥ २॥*

(O Kapiñjala) speak auspicious words with sons; and speak auspicious words in the houses; speak auspicious words for us; speak for us the auspicious words of fearlessness.

(हे कपिञ्जल) पुत्रों सहित कल्याणकारी शुभ शब्द हमारे लिये बोलो, हमारे लिये कल्याणकारी शब्द (बोलो), भयरहित (होने का शब्द) हमारे लिये बोलो।

१३. भद्रमधस्तान्नो वद भद्रमुपरिष्टाद् वद। भद्रंभद्रं न आ वद भद्रं नः सर्वतो वद॥ ३॥ ★

Speak auspicious words for us from below; speak auspicious words from above; speak for us all auspicious words; speak for us auspicious words from all sides.

(हे कपिञ्जल,) नीचे से हमारे लिये कल्याणकारी शुभ शब्द बोलो; ऊपर से हमारे लिये कल्याणकारी शुभ शब्द बोलो; हमारे लिये हर प्रकार का कल्याणकारी शुभ वचन चारों तरफ से बोलो; हमारे लिये कल्याणकारी शुभ शब्द सभी ओर से बोलो।

१४. असपत्नं पुरस्तान्नः शिवं दक्षिणतस्कृधि।
अभयं सततं पश्चाद् भद्रमुत्तरतो गृहे॥ ४॥ ★

(Speak) about absence of enmity for us from the fore; make auspicious sounds from the south; (speak) always about absence of fear from the back and auspicious words from the north in our house.

(हे कपिञ्जल,) सामने से हमारे लिये शत्रुरहित (होने का शब्द) करो, दक्षिण की ओर से हमारे लिये मङ्गलकारी (शब्द) करो; पश्चिम की ओर से निरन्तर भयरहित होने का (शब्द बोलो), उत्तर की ओर से कल्याणकारी शुभ (शब्द) हमारे घर में (बोलो)।

१५. यौवनानि महयसि जिग्युषामिव दुन्दुभिः।
शकुन्तक प्रदक्षिणं शतपत्राभि नो वद॥ ५॥ ★ [१३] {४}

O Bird of omen (Śakuntaka), you enhance the youthhood (of our persons) as the battle-drum (inspires) the aspirers of victory. O Śakuntaka, O possessor of hundred wings, speak auspicious words for us from all directions clockwise.

(हे शकुन्तक), (हमारे लोगों की) युवावस्था को तुम बढ़ाते हो, जैसे दुन्दुभि विजय की इच्छा रखने वाले (सैनिकों) के (उत्साह) को। हे सौ पंख वाले शकुन्तक, चारों तरफ से प्रदक्षिण क्रम से हमारे लिये (कल्याणकारी शब्द) बोलो।

Sūkta V.44

१६. जागर्षि त्वं भुवने जातवेदो जागर्षि यत्र यजते हुविष्मान्।
इदं हुविः श्रद्दधानो जुहोमि तेन पासि गुह्यं नाम गोनाम्॥ १६॥ ★ [२५] {३}

O Jātavedas, the knower of the wealth, you (always) keep awake in the region; (you) keep awake where the sacrificer offers (the oblations). I, having faith in you, offer this oblation; verily with that you protect the hidden name i.e. the nourishing property of the cows.

हे समस्त उत्पन्न पदार्थ को जानने वाले अग्नि, तुम सम्पूर्ण भुवन में सदैव जागते रहते हो, जहां (भी) हविः प्रदान करने वाला यजमान तुम्हें हविः प्रदान करता है। श्रद्धाभाव से युक्त मैं यह हविः तुम्हारे लिये समर्पित करता हूँ; उसी से तुम सम्पूर्ण गायों (पोषणकारी तत्त्वों) के अन्दर निहित (पोषक) तत्त्वों की रक्षा करते हो।

Sūkta V.49

१७. सूक्तान्ते तृणान्युग्नावरण्ये वोदुकेऽपि वा।
यत्स्तृणैरध्ययनं तदधीतं भवति ध्रुवम्॥ ६॥ ★ [३]

The study with offering *kuśa* (grass) in the fire or in the water at the end of a *sūkta*, is knowledge indeed. That study verily becomes knowledge by expansion (of what has been studied).

सूक्त (अध्ययन) के अन्त में कुशाओं को अग्नि या जल में डालकर जो अध्ययन किया जाता है, वह निश्चित ही अध्ययन की परिपूर्णता के लिये होता है।

Sūkta V.51

१८. स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमरिष्टनेमिं महद्भूतं वायसं देवतानाम्।
असुरघ्नमिन्द्रसखं समत्सु बृहद्यशो नावमिवा रुहेम॥ १६॥ ★

The Tārkṣya (the Garuḍa or Viṣṇu), having auspicious movement and the felly of whose wheel (*nemi*) is unhurt, (who is) the most powerful Being, (who is) a large bird of gods, (who is) the killer of demons (darkness), who has Indra as his ally in the battlefields and who is the possessor of great glory, we ride (depend) on him as if (he is) a boat.

कल्याणकारी ढंग से गन्तव्य तक पहुँचाने वाले, जिसके रथ की परिधि कभी हिंसित नहीं होती, महान् सत्त्व वाले, असुरों को नष्ट करने वाले, इन्द्र जिसके मित्र हैं, तथा जो महान् यश वाले हैं, उस देवताओं के पक्षी गरुड (विष्णु) पर हम नाव की तरफ आरूढ (आश्रित) हों।

१९. अंहोमुचमाङ्गिरसं गयं च स्वस्त्यात्रेयं मनसा च तार्क्ष्यम्।
प्रयतपाणिः शरणं प्र पद्ये स्वस्ति संबाधेष्वभयं नो अस्तु॥ १७॥ ★ [७]

With folded hands, I surrender (myself) with my whole heart and mind to Tārkṣya (i.e. Viṣṇu), the remover of all sins, the most vital essence of the body, the ultimate goal of life, and the protector from all sides. Let welfare and absence of fear be for us in all confrontations.

समस्त पापों से मुक्त करने वाले, शरीर के प्रत्येक अंग में रस रूप में विद्यमान सबके परम गन्तव्य, अत्रिवंशियों का कल्याण करने वाले तार्क्ष्य (विष्णु) की शरण में मन से दोनों हाथ फैलाकर जाता हूँ। समस्त बाधाओं में हमारा कल्याण हो तथा हमें किसी प्रकार का भय न हो।

Sūkta V.84

२०. वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः।
रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ४ ॥ * [२१]

O Illuminous (the Earth), may the electric sparks of cloud fall down for you from the sky. May all seeds grow up. You destroy the haters of prayers.

हे विशिष्ट प्रकाशवाली पृथिवी, द्युलोक से मेघ की विद्युत्-रश्मियाँ तुम्हारे ऊपर बरसें (जिससे) सम्पूर्ण (पार्थिव) बीज अङ्कुरित हों; जो उत्पादन से द्वेष करने वाले (तत्त्व) हैं, उनको नष्ट करो।

Sūkta V.88

२१. हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममा वह ॥ १ ॥ *

O Jātavedas (the Fire-god), bring to me the Lakṣmī, having golden colour, the attractor (of many), bearing golden- and silver-coloured garlands, attractive, and adorned with gold.

हे सबको जानने वाले अग्नि, स्वर्णिम वर्ण वाली, सबके हृदय को आकृष्ट करने वाली, सोने तथा चांदी की माला धारण करने वाली, प्रकाशमान, स्वर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिये लावो।

२२. तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥ *

O Jātavedas (the Fire-god), bring to me the Lakṣmī, who is never to leave me and in whom I may get gold, cow, horse and men.

हे सबको जानने वाले अग्नि, कभी हमसे दूर न जाने वाली उस लक्ष्मी को मेरे लिये लावो, जिसमें मैं स्वर्णादि रत्न-धन, गाय-अश्व आदि पशु-धन तथा पुत्र-पौत्र-मित्र-नौकर आदि पुरुष-धन को प्राप्त करूं।

२३. अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥ *

I invoke the Goddess Śrī, (who is) accompanied with horses in the front, chariots in the middle and who is extremely happy with the sound of elephants. Let the Goddess Śrī be happy with me.

घोड़े जिसके आगे हैं, रथ जिसके मध्य में हैं, और चिंघाड़ते हुये हाथी जिसको प्रमुदित करने वाले हैं, उस शोभायुक्त देवी लक्ष्मी को मैं पुकारता हूँ। वह श्रीस्वरूपा देवी लक्ष्मी मुझे स्वीकार करे।

२४. **कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ४॥ ★

I invoke here that Śrī who is indescribable, always smiling, covered with thin golden cloth, always graceful, shining with brilliance, (always) satisfied, granting pleasure to others' satisfaction, sitting on lotus, and herself being lotus-coloured.

ब्रह्मरूपा, सदा मुस्कान से युक्त रहने वाली, स्वर्णिम आवरण वाली, कोमल, प्रकाशमान, सदा तृप्त रहने वाली तथा दूसरों को (धन्य-धान्य से) प्रसन्न करने वाली, कमल पर निवास करने वाली, कमल के समान सुन्दर कमनीय वर्ण वाली उस लक्ष्मी का मैं आह्वान करता हूँ।

२५. **चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।**
तां पद्मनेमिं शरणं प्र पद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥ ५॥ ★ [३५]

I, in this world, surrender myself to that Śrī who is attractive, shining with brilliance, burning with glory, worshipped by the gods, benevolent and having lotus as axle of her chariot. May my scarcity of wealth (poverty) come to its end, and (with this desire) I choose you (O Goddess Śrī).

आह्लादकारी, अत्यन्त प्रकाश वाली, अपनी कीर्ति से सर्वत्र प्रकाशित होने वाली, देवताओं से सेवित, उदार, कमल का घेरा वाली उस लक्ष्मी की मैं शरण में जाता हूँ। मेरी अलक्ष्मी (दरिद्रता) नष्ट होवे। (हे लक्ष्मी, इन गुणों से युक्त) तुम्हारा मैं वरण करता हूँ।

२६. **आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।**
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥ ★

O the possessor of the brilliance of the Sun, the *bilva* tree, born out of your penance, may its fruit, (blessed) with your penance, take away the inner ignorance and all types of scarcity and shortage from my life outside.

हे आदित्य के समान वर्ण वाली लक्ष्मी, वृक्षों में श्रेष्ठ बिल्व वृक्ष तुम्हारे तेज से उत्पन्न हुआ है। तुम्हारे तेज से उसके फल इन्द्रिय सम्बन्धी आन्तरिक अज्ञान तथा कर्मेन्द्रिय सम्बन्धी बाह्य जो दरिद्रता आदि अलक्ष्मी है, उसे दूर करें।

२७. उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे॥ ७॥ ★

May he, whose friends are gods, and his glory, with precious gems, come to me. I have taken my birth in this nation, may he grant me glory, growth and prosperity.

हे लक्ष्मी, धनादि प्रदान करने वाली देवताओं की मित्रता तथा विविध रत्न-रूप धन के साथ कीर्ति मेरे पास आवे। मैं इस राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ, (वह लक्ष्मी) मेरे लिये (इस राष्ट्र में) कीर्ति और वृद्धि प्रदान करे।

२८. क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥ ★

I destroy the Alakṣmī (the absence of wealth), the eldest one, having the form of hunger, thirst and dirtiness. (O Goddess of wealth,) banish from my house (nation) all types of dearth and poverty.

भूख और प्यास से सदा मलिन, अत्यन्त बूढ़ी अलक्ष्मी को मैं नष्ट करता हूँ। हे लक्ष्मी, सम्पूर्ण अवैभव तथा असमृद्धि को मेरे घर से दूर करो।

२९. गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ९॥ ★

I invoke here that Śrī, who is pleased with fragrance, the most powerful, growing day by day, abounding in cattle wealth, and the ruler of all beings.

गन्धग्रहणरूप लक्षण वाली, किसी के द्वारा दबाई न जाने वाली, नित्य बढ़ने वाली, गाय-अश्व आदि पशु-रूप समृद्धि वाली तथा सभी प्राणियों के ऊपर शासन करने वाली उस लक्ष्मी का आह्वान करता हूँ।

३०. मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥ ★

[३६]

May we obtain the fulfilment of our desires and intention of the mind, the

truthfulness of the speech, and the (various) forms of cattle and grain. Let the Goddess Śrī bestow on me the glory.

(हे लक्ष्मी,) मन की कामना, संकल्प शक्ति तथा वाणी की सत्यता को हम प्राप्त करें। पशुओं की समृद्धि, अन्न का भोग, लक्ष्मी तथा यश मुझ में स्थित हों।

३१. कर्दमेन प्रजा भूता मयि सं भव कर्दम।
श्रियं वासय मे गृहे मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥*

The offsprings have been created by Kardama; O Kardama, reside in me. Make the Mother Śrī, wearing lotus-garlands, stay in my house forever.

जिस (तुझ) कर्दम नामक पुत्र के द्वारा लक्ष्मी सुपुत्रा हुई है, वह तुम हे कर्दम, मेरे घर में होवो और कमल की माला धारण करने वाली अपनी माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास करावो।

३२. आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२॥*

Let the waters bring smoothness; O Cikḷīta, reside in my house and make the Goddess Mother Śrī reside in my family.

सभी प्रकार के जल स्निग्ध ओषधियों को उत्पन्न करें। हे (लक्ष्मी के पुत्र) चिक्लीत, मेरे घर में निवास करो और अपनी माता देवी लक्ष्मी को भी मेरे कुल में निवास करावो।

३३. आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मम आवह॥ १३॥*

O Jātevadas (Agni, the source of all wealth), bring to me the Lakṣmī, who is very kind, residing in the lotus pond, keeping a mace in her hand, possessing a beautiful colour, wearing golden chains, having the lustre of the sun, and adorned with gold.

हे सबको जानने वाले अग्नि, पूर्ण युवावस्था को प्राप्त हुई, कमल धारण करने वाली, अत्यन्त पुष्ट अङ्ग वाली, पिङ्गल वर्ण वाली, कमल की माला धारण करने वाली, सूर्य के समान प्रकाश वाली, हिरण्य से युक्त लक्ष्मी को मेरे पास लावो।

३४. आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टां पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मम आवह॥ १४॥*

O Jātavedas, bring to me the Lakṣmī, who is very kind, residing in the lotus

pond, well-accomplished of reddish-colour, wearing golden chains, having an attractive complexion and adorned with gold all over.

हे सबको जानने वाले अग्नि, कोमल अङ्ग वाली (अथवा उदार चित्त वाली), कमल धारण करने वाली, हाथ में वेत धारण करने वाली, सुन्दर वर्ण वाली, सोने की माला धारण करने वाली, आह्लादकारी (चांदी-रूप में) तथा स्वर्णरूपा लक्ष्मी को मेरे पास लावो।

३५. तां म॒ आ व॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगामिनीम्।
यस्यां॒ हिर॑ण्यं॒ प्रभू॑तं गावो॑ दा॒स्योऽश्वा॑न् वि॒न्देयं॒ पुरु॑षान॒हम्॥ १५॥ ★

O Jātavedas, bring to me the Lakṣmī who should never depart and from whom I may get ample gold, cows, servants, horses and men.

हे सबको जानने वाले अग्नि, हमसे कभी अलग न होने वाली उस लक्ष्मी को मेरे पास लावो, जिससे मैं बहुत-सा स्वर्ण, गाय-अश्व आदि पशु-धन व दासी, पुत्र, पौत्र आदि पुरुष-धन को प्राप्त करूँ।

३६. यः शुचि॒: प्रय॑तो भू॒त्वा जु॒हुया॒दाज्य॑मन्व॒हम्।
श्रि॒यः प॑ञ्चदश॒र्चं च॒ श्रीका॑म॒: सत॑तं जपेत्॥ १६॥ ★ [३७]

Whosoever, having become pure and sinless, offers the oblation of clarified butter daily, (he gets the blessings of Lakṣmī). A man desirous of wealth should chant daily (the hymn) of Lakṣmī, comprising the (above) fifteen *ṛk*s.

जो व्यक्ति बाह्य तथा आभ्यन्तर रूप से पवित्र होकर प्रतिदिन इन मन्त्रों से घृत की आहुति प्रदान करता है (उसकी मनोकामना पूर्ण होती है)। लक्ष्मी प्राप्ति की कामना वाले व्यक्ति को इन पन्द्रह ऋचाओं वाले सूक्त का नित्य पाठ या जप करना चाहिए।

Sūkta V.89

३७. पद्मा॑नने॒ पद्मि॑नि॒ पद्म॑पत्रे॒ पद्म॑प्रिये॒ पद्म॑दलायताक्षि।
विश्व॑प्रिये॒ विश्व॑मनोनुकूले त्वत्पाद॒पद्मं मयि॒ सं नि ध॑त्स्व॥ १॥ ★

O Devī having lotus-like face, O possessor of lotus, O residing on lotus leaf, O ver of lotus, O wide lotus-eyed, O lovely to all, O congenial to the mind of all, you ep your lotus-feet on me.

हे कमल के समान सुन्दर मुख वाली, हे विकसित कमल सदृश युवती, हे कमल के पत्ते पर ास करने वाली, हे कमल से प्रेम करने वाली, हे कमल के पत्र सदृश विशाल नेत्र वाली, हे सबकी

प्रिय, हे सबके मन के अनुकूल रहने वाली, तुम अपने चरण-कमल को मेरे (हृदय) में सम्यक् प्रकार से प्रतिष्ठित करो।

३८. पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसंभवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥ २॥★

O Devī having lotus-like face, having lotus-like thigh, O lotus-eyed, O born of lotus, you provide me wealth from which I get immense pleasure.

हे कमल के समान सुन्दर मुख वाली, हे कमल के समान विशाल जंघाओं वाली, हे कमल के समान नेत्र वाली, हे कमल से उत्पन्न होने वाली, हे कमल के समान नेत्र वाली, वह तुम मुझे वह प्रदान करती हो, जिससे मैं (हर प्रकार का) सुख प्राप्त करता हूँ।

३९. अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामाँश्च देहि मे॥ ३॥★

O giver of horse, O giver of cow, O giver of wealth, O possessor of great wealth, O goddess, grant me wealth and fulfil all my desires.

हे अश्वधन प्रदान करने वाली, हे गोधन प्रदान करने वाली, हे धन प्रदान करने वाली, हे श्रेष्ठ धन वाली, (तुम्हारे द्वारा प्रदत्त) धन मुझे प्रसन्न करे। हे देवी! मेरी सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करो।

४०. पुत्रपौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरै रथैः।
प्रजानां भवसि मातरायुष्मन्तं करोतु माम्॥ ४॥★

O mother, for procreation you become bestower of sons, grandsons, wealth, and grain, drawn by chariots yoked with elephants, horses and mules; make me enjoy longevity of life.

हाथी, घोड़े, खच्चर, रथ आदि से युक्त पुत्र, पौत्र, धन, धान्य आदि अपनी प्रजाओं को देने वाली होती हो, इसलिए हे माता मुझे दीर्घायु से युक्त करो।

४१. धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमुच्यते॥ ५॥★

Agni is (called) wealth; wind is (called) wealth; sun is (called) wealth; Vasu is (called) wealth; Indra is (called) wealth; Bṛhaspati is (called) wealth; and Varuṇa is called wealth.

अग्नि को धन (कहा जाता है), वायु को धन (कहा जाता है), सूर्य को धन (कहा जाता है), वसु को धन (कहा जाता है), इन्द्र को धन (कहा जाता है), बृहस्पति तथा वरुण को धन कहा जाता है।

४२. वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥ ६॥ ★

O son of Vinatā, drink *soma*. May Indra, the killer of Vṛtra, drink *soma*. Let the possessors of *soma* give me the *soma* (pleasure) of wealth.

हे विनता के पुत्र (गरुड), सोम का पान करो; वृत्र को मारने वाले (इन्द्र) सोम का पान करें। सोम से युक्त (व्यक्ति) के धन का (धन-रूप सोम लक्ष्मी) मुझे प्रदान करे।

४३. न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्॥ ७॥ ★

Neither anger nor envy, neither greed nor evil thought come to the worshippers, who have accomplished meritorious acts in their former lives. (Therefore) one should chant the hymn addressed to the Goddess Śrī always.

श्रीसूक्त का जप करते हुये पुण्य कर्म करने वाले भक्तों को न तो कभी क्रोध होता है, न कभी ईर्ष्या, न कभी लोभ होता है और न ही कभी अशुभ बुद्धि होती है।

४४. विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥ ८॥ ★

I bow to the Goddess Lakṣmī, the consort of Viṣṇu, Kṣamā (the Earth), Mādhavī, the beloved of Mādhava, the dearest friend and the favourite spouse of Acyuta (Viṣṇu).

विष्णु की पत्नी क्षमास्वरूपा, वसन्त की शोभा वाली, विष्णुप्रिया, प्रियसखी, अच्युत विष्णु की वल्लभा (प्रियतमा) देवी लक्ष्मी को मैं नमस्कार करता हूँ।

४५. महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात्॥ ९॥ ★

May we know the Mahālakṣmī and meditate upon the consort of Viṣṇu; may that Lakṣmī, impel us.

महालक्ष्मी को हम प्राप्त करें (या जानें), विष्णु-पत्नी का हम (सदा) चिन्तन करें। वह (जगज्जननी) लक्ष्मी हमें (सत्कर्मों द्वारा धनार्जन में) प्रेरित करे।

४६. श्रीर्वर्चस्वमायुष्यं१मारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
धान्यं१धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ १०॥ ★ [३८]

May the Śrī bestow upon us the vital power, longevity and freedom from diseas

being pure she is worshipped for grain, wealth, cattle, attainment of many sons and long life for hundred years.

लक्ष्मी हमें ब्रह्मवर्चस्, आयुष्य, आरोग्य तथा नित्य पवित्रता प्रदान करे। वह लक्ष्मी अन्न, धन, पशु, पुत्र-पौत्र तथा सौ वर्ष की लम्बी आयु प्रदान करने के लिये (सबके द्वारा) पूजित होती है।

Sūkta VI.44

४७. चक्षुश्च श्रोत्रं च मनश्च वाक् च प्राणापानौ देहं इदं शरीरम्।
द्वौ प्रत्यञ्चावनुलोमौ विसर्गावेतं तं मन्ये दशयन्त्रमुत्सम्॥ २५॥*

I consider this body consisting of the eye, the ear, the mind, the speech, the two vital breaths — the *prāṇa* and *apāna* —, the form (*deha*), the two creations — inverted and direct — as the tenfold water-raising-machine.

आंख, कान, मन, वाक्, प्राण-अपान से युक्त तथा अनुलोम-प्रतिलोम रूप दो बहाव वाले इस शरीर को दश फौव्वारों वाला जलयन्त्र मानता हूँ।

४८. उरश्च पृष्ठश्च करौ च बाहू जंघे चोरू उदरं शिरश्च।
रोमाणि मांसं रुधिरास्थिमज्जमेतच्छरीरं जलबुदबुदोपमम्॥ २६॥*

This body — consisting of the heart, the back, the two palms, the two arms, the two thighs, the two breasts, the belly, the head, the hair, the flesh, the blood, the bone, the marrow — is just like a bubble in the water.

हृदय, पीठ, दो हथेलियां, दो भुजायें, दो जंघाये, दो स्तन, पेट, शिर, रोम, मांस, रुधिर, हड्डी एवं मज्जा से युक्त यह शरीर जल के बुलबुले के समान है।

४९. भ्रुवौ ललाटे च तथा च कर्णौ हनू कपोलौ छुबुकस्तथा च।
ओष्ठौ च दन्ताश्च तथैव जिह्वा एतच्छरीरं मुखरत्नकोशम्॥ २७॥* [२०]

(I consider) this head, consisting of the two eye-brows on the forehead, the two ears, the two jaws, the two cheeks, the chin, the two lips, the teeth, the tongue as the treasurehouse of gems in the body.

ललाट पर दो भौंहें, दो कान, दो जबड़े, दो गाल, ठुड्डी, दो ओंठ, दाँत तथा जिह्वा से युक्त इस मुख-मण्डल को शरीर में स्थित दश रत्नों का कोश मानता हूँ।

Sūkta VII.56

५०. स्वप्नं स्वप्नाधिकरणे सर्वं नि ष्वापया जनम्।
आसूर्यमन्यान्त्स्वापय हृद्यहं जागृयामिह॥ १॥*

O dream, in the realm of sleeping do make all people sleep; make others sleep till the rising of the sun; may I keep awake in my heart here.

हे स्वप्न, (शयन) के आधार इस गृह (शरीर) में सभी जनों को अच्छी प्रकार से सुला दो। सूर्योदयपर्यन्त अन्य सबको सुला दो, (किन्तु) मैं यहां अपने हृदय में जागता रहूं।

५१. अजगरो नाम सर्पः सर्पिरविषो महान्।
तस्मिन्हि सर्पः सुधितस्तेन त्वा स्वापयामसि॥ २॥ ★

The serpent, called Ajagara, the great, who has clarified butter (*ghee*) in him is poisonless; in him the serpent is well-placed; we make you sleep with him.

अजगर नाम का सर्प है, जिसके अन्दर घृत है; वह महान् (सर्प) बिना विष का है। उसी (गृह) में सर्प अच्छी प्रकार से स्थित है, उसी के साथ तुमको सुला रहा हूँ।

५२. सर्पः सर्पो अजगरः सर्पिरविषो महान्।
तस्य शुष्कात्सिन्धवस्तस्य गाधमशीमहि॥ ३॥ ★

The serpent, the great serpent Ajagara has clarified butter (*ghee*) in him and (is) poisonless. From his dry (mouth) the rivers (flow). May we attain his fordable place.

(वह) सर्पणशील सर्प, अजगर, अन्दर घृत वाला है, (वह) महान् (सर्प) बिना विष का है। उसके शुष्क (मुख) से समुद्र प्रवाहित होता है, हम उसकी थाह को प्राप्त करें।

५३. कालिको नाम सर्पो नवनागसहस्रबलः।
यमुनह्रदे ह सो जातो ३ऽसौ नारायणवाहनः॥ ४॥ ★

The serpent, known as Kāḷika, the possessor of strength of a thousand young elephants; verily he is born in the Yamunā river. He is the carrier of Nārāyaṇa.

(वह) कालिक नाम का सर्प नये सहस्र हाथियों के बल वाला है। वही यमुन-सरोवर में पैदा हुआ है, वही नारायण का वाहन है।

५४. यदि कालिकदूतस्य यदि काःकालिकाद्भयम्।
जन्मभूमिं परिक्रान्तो निर्विषो याति कालिकः॥ ५॥ ★

If there is a fear from the messenger of Kāḷika, if there is a fear from the Kāḥkḷika particular type of serpent; moving in the area of the birthplace the Kāḷika becomes poisonless.

यदि उस कालिक सर्प के दूत को काःकालिक (सर्प की एक विशेष जाति) से भय है तो (यह क नहीं, क्योंकि) जन्मभूमि को पार करने पर वह काळिक विषरहित हो जाता है।

५५. आ याहीन्द्र पथिभिरीळितेभिर्यज्ञमिमं नो भागधेयं जुषस्व।
तृप्तां जहुर्मातुलस्येव योषा भागस्ते पैतृष्वसेयी वपामिव॥ ६॥ ★

O Indra, come by the adorable paths to our sacrifice and enjoy this share (offered to you). Your share has been offered as a woman (gets) the share of the brother of the mother (maternal uncle) and the daughter of the sister of father (gets) like a mound or heap (thrown away by the ants).

हे इन्द्र, प्रशंसनीय मार्गों से आवो और हमारे (द्वारा अर्पित अपने) इस यज्ञभाग को प्रीतिपूर्वक स्वीकार करो, जिस प्रकार कोई स्त्री तृप्त होने पर भी अपने मामा के द्वारा प्रदत्त धन को (हर्षपूर्वक) ग्रहण करती है। यह तुम्हारा भाग बुआ को दी गई सम्पत्ति के समान (पुनः वापस लेने के लिये नहीं) है।

५६. यशस्करं बलवन्तं प्रभुत्वं तमेव राजाधिपतिर्बभूव।
संकीर्णनागाश्वपतिर्नराणां सुमङ्गल्यं सततं दीर्घमायुः॥ ७॥ ★

To him the kingship, accompanied with lordship of elephants and horses, confers glory, power and excelling might; let it always bring good fortune and longevity.

हाथी, अश्व तथा मनुष्यों से युक्त जो राजाधिपतित्व है, वही यश देने वाला, बल से युक्त प्रभुत्व का द्योतक, सुन्दर मङ्गल वाला तथा अत्यन्त सुदीर्घ आयु वाला होता है।

५७. कर्कोटको नाम सर्पो यो दृष्टीविष उच्यते।
तस्य सर्पस्य सर्पत्वं तस्मै सर्प नमोऽस्तु ते॥ ८॥ ★ [२३] {३}

The serpent, named Karkoṭaka, who is poisonous by the mere look; the serpenthood is indeed of that serpent; to thee, O serpent, be my salutation.

कर्कोटक नाम का सर्प जिसको देखने मात्र से ही विष-व्याप्त करने वाला कहा जाता है, उसी सर्प का सर्पत्व है; हे सर्प, उस तुमको मेरा नमस्कार है।

Sūkta VII.97

५८. यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे यस्य व्रतमुपतिष्ठन्त आपः।
यस्य व्रते पुष्टिपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे हुवेम॥ ७॥ ★ [२०]

Whose command follow all the animals; whose command obey the waters; by whose command the lord of prosperity is seated; that Sarasvān, the lord of waters, we invoke here for our protection.

जिसके नियम का सभी पशु अनुपालन करते हैं; जिसके नियम का पालन सभी प्रकार के जल

करते हैं; जिसके नियम में सभी पोषण तत्त्वों के अधिपति समाविष्ट हैं, उस सरस्वान् को हम अपनी रक्षा के लिये पुकारते हैं।

Sūkta VII.104

५९. उपप्रवंद मण्डूकि वर्षमा वंद तादुरि।
मध्यें ह्रदस्यं प्लवस्व विगृह्यं चतुरंः पदः ॥ ११ ॥ * [४]

O female frog, speak out; O Tādurī, the female swimmer, predict the rains; swim in the midst of the pond having spread out your four legs.

हे मेंढकी बोलो; हे जल में तैरने वाली मेंढकी, वर्षा के लिये भविष्यवाणी करो। अपने चारों पैरों को फैलाकर सरोवर के मध्य में तैरो।

Sūkta IX.68

६०. यन्मे गर्भें वसंतः पापमुग्रं यज्जायंमानस्य च किञ्चिंदुन्यत्।
जातस्य यच्चापिं च वर्धतो मे तत्पांवमानीभिंरहं पुंनामि ॥ १ ॥ *

Whatever ferocious sins have been committed by me while residing in the womb, and whichever others while taking birth; whatever after taking birth and (what) in the process of my growth, those (sins) I purify by (reciting) these *pāvamānī ṛks*.

गर्भ में रहते हुये जो कुछ भयंकर पाप (हमने किया है); जो कुछ अन्य पाप उत्पन्न होते समय; जो कुछ उत्पन्न होने के बाद तथा जो कुछ पाप आयु के बढ़ने के साथ हमने किया है, उन सबको पावमानी ऋचाओं के द्वारा पवित्र करता हूँ।

६१. मातापित्रोर्यन्न कृतं वचों मे यत्स्थांवरं जङ्गमंमाबभूवं।
विश्वंस्य यत्प्रंहृषितं वचों मे तत्पांवमानीभिंरहं पुंनामि ॥ २ ॥ *

Whatever (sins) have been committed by me by disobeying the words of my parents, whatever to the non-moving and moving-ones; whatever to all my well-wishers; those (sins), I purify by reciting the *pāvamāni ṛks*.

जो माता-पिता के वचनों का पालन न करने से, जो स्थावर तथा जंगम प्राणियों को कष्ट देकर था जो अपने शुभचिन्तकों से अनुचित वचन बोलकर हमने (पाप) किया है, उन सभी (पापों से) पने को मैं पावमानी ऋचाओं के द्वारा पवित्र करता हूँ।

२. क्रयविक्रयाद्योंनिदोषाद् भक्षाद्भोज्यांत्प्रतिग्रहात्।
असंभोजनाच्चापिं नृशंसं तत्पांवमानीभिंरहं पंनामि ॥ ३ ॥ *

Whatever cruel sins, I have accrued through purchase and sale, sexual defilement, drinking and eating, accepting donation, and eating with whom one ought not to eat, those I purify with the *pāvamānī ṛks*.

वस्तुओं के क्रय-विक्रय से, व्यभिचार कर्म के दोष से, खान-पान से, अन्यों को भोजन कराने में, किसी से दानादि लेने से, जिनके साथ नहीं खाना चाहिये उनके साथ खाने से, जो कोई पाप मैंने किया है, पावमानी ऋचाओं के द्वारा अपने को पवित्र करता हूँ।

६३. गोघ्नात्तस्करत्वात्स्त्रीवधाद्यच्च किल्बिषम्।
पापकं च चरणेभ्यस्तत्पावमानीभिरहं पुनामि॥ ४॥ ★

(Whatever) sins (I have committed) through killing of a cow, thieving, slaying of a woman and observance of sinful acts, those I purify with the *pāvamāni ṛks*.

गो-वध से, चोरी से, स्त्री-वध से तथा पापपूर्ण कर्म के आचरण करने से, जो कुछ घोर पाप मैंने किया है, पावमानी ऋचाओं के द्वारा उन पापों से अपने को पवित्र करता हूँ।

६४. ब्रह्मवधात्सुरापानात्सुवर्णस्तेयाद्वृषलीमिथुनसंगमात्।
गुरोर्दाराभिगमनाच्च तत्पावमानीभिरहं पुनामि॥ ५॥ ★ [१९]

Whatever (sins I have committed) through killing of a brāhmaṇa, drinking of wine, stealing of gold, having copulation with a woman during her menstruation (or a woman of a low caste), doing sexual intercourse with the wife of the teacher, those I purify with the *pāvamāni ṛks*.

ब्रह्म-हत्या से, सुरापान करने से, स्वर्ण की चोरी करने से, ऋतुकाल में स्त्री-भोग करने से, गुरु की पत्नी के साथ समागम से जो पाप मैंने किया है, पावमानी ऋचाओं के द्वारा उस पाप से अपने को पवित्र करता हूँ।

६५. बालघ्नान्मातृपितृवधाद् भूमितस्करात्सर्ववर्णगमनमिथुनसंगमात्।
पापेभ्यश्च प्रतिग्रहात्सद्यः प्र हरन्ति सर्वदुष्कृतं तत्पावमानीभिरहं पुनामि॥ ६॥ ★

(The sins which I have committed) by killing a child, killing of mother and father, stealing of land, having copulation with women of all castes and from all sins, and that from taking donations, those I purify with the *pāvamānī ṛks*, which immediately throws out all the wrong deeds.

बाल-वध से, माता-पिता के वध से, भूमि की चोरी करने से, सभी वर्ण की स्त्रियों के साथ मैथुन करने से तथा किसी का दान लेने से जो पाप होता है, उन सभी पापों तथा अन्य दुष्कर्मों को जो दूर करती है, उन पावमानी ऋचाओं के द्वारा मैं अपने को पवित्र करता हूँ।

६६. अमन्त्रमन्तं यत्किञ्चिद्धूयते च हुताशने।
संवत्सरकृतं पापं तत्पावमानीभिरहं पुनामि॥ ७॥ ★

Whatever oblation offered in the sacrificial fire without an accompanying *mantra*, and whatever sins done in the year, those I purify with the *pāvamānī ṛks*.

बिना मन्त्र का उच्चारण किये अग्नि में अन्न की आहुति देने से उत्पन्न तथा संवत्सर पर्यन्त किये पाप को (जो दूर करती है), उन पावमानी ऋचाओं के द्वारा मैं अपने को पवित्र करता हूँ।

६७. दुर्यष्टं दुरधीतं पापं यच्चाज्ञानतो कृतम्।
अयाजिताश्चासंयाज्यास्तत्पावमानीभिरहं पुनामि॥ ८॥ ★

Whatever (oblation) wrongly offered, whatever wrongly studied and whatever sins done unknowingly; (whatever) not offered and (offered) without *saṁyājyā mantras*, those I purify with the *pāvamāni ṛks*.

गलत ढंग से अग्नि में आहुति डालने, गलत ढंग से मन्त्र का अध्ययन करने, अज्ञान से कर्म करने, आहुति न डालने तथा संयाज्या ऋचाओं के बिना आहुति डालने से उत्पन्न जो पाप हैं, उनसे पावमानी ऋचाओं के द्वारा अपने को मैं पवित्र करता हूँ।

६८. ऋतस्य योनयोऽमृतस्य धाम सर्वा देवेभ्यः पुण्यगन्धाः।
ता न आपः प्र वहन्तु पापं शुद्धो गच्छामि सुकृतामु लोकं
तत्पावमानीभिरहं पुनामि॥ ९॥ ★

The very roots of *ṛta* (the Eternal Cosmic Law), the abode of *amṛta* (immortality) and all the sweet-scented (waters) for the gods, may these waters wash out our sins. Having become purified, I go to the region of the pious ones; I purify myself with the *pāvamānī ṛks*.

जो ऋत की मूलाधार हैं, अमृत का स्थान हैं, पुण्य सुगन्ध वाली हैं तथा सभी देवताओं के लिये है, वे जल देवियाँ हमारे पाप को दूर करें। मैं पवित्र होकर पुण्यात्माओं के लोक को जाता हूँ। उन पावमानी ऋचाओं के द्वारा मैं अपने को पवित्र करता हूँ।

६९. इन्द्रः सुदीती सह मा पुनातु सोमः स्वस्त्या वरुणः सुनीत्या।
यमो राजा प्रमृणाभिः पुनातु मा जातवेदा मोर्जयन्त्या पुनातु॥ १०॥ ★ [२०]

May Indra purify me with his auspicious brilliance; Soma with welfare, (and) Varuṇa with good guidance. May the king Yama purify me with destruction (of

enemies); may Agni, the knower of all, purify me with his sharpened energy.

इन्द्र अपने सुन्दर तेज से, सोम अपने कल्याण से तथा वरुण अपने सुन्दर नेतृत्व से एक साथ मुझे पवित्र करें। राजा यम शत्रुओं के विनाश द्वारा मुझे पवित्र करे; सभी उत्पन्न पदार्थों को जानने वाला अग्नि अपनी ऊर्जा से मुझे पवित्र करे।

७०. पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्च्युतः।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम्॥ ११॥ *

The *pāvamāni ṛks*, leading to welfare *par excellence*, yielding abundance, and distilling clarified butter, the essence of universal pleasure, gathered by the seers, has been placed as ambrosia in the brāhmaṇas.

कल्याण की ओर ले जाने वाली, सुन्दर दोहन वाली तथा शाश्वत आनन्द-रूप घृत बरसाने वाली जो पावमानी ऋचायें हैं, वे ऋषियों के द्वारा रस के रूप में एकत्रित की गई हैं तथा ब्राह्मणों के अन्दर अमृत रूप में प्रतिष्ठित हैं।

७१. पावमानीर्दिशन्तु न इमल्लोकमथो अमुम्।
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवैर्देवीः समाहिताः॥ १२॥ *

Let *pāvamānī ṛks* direct us to this world and thereafter to that heavenly world. Let the goddesses, accompanied by the gods, fulfil our desires.

(ये) पावमानी ऋचायें हमें इस लोक तथा उस परम लोक की ओर निर्देशित करें। देवताओं के साथ एकमत होती हुई ये देवियाँ हमारी सम्पूर्ण कामनाओं को सम्यक् प्रकार से परिपूर्ण करें।

७२. येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा। तेन सहस्रधारेण पवमानः पुनातु मा॥ १३॥ *

With which purifying grass, the *pavitra*, the gods always purify themselves, with the same thousand-edged (*pavitra*) may the Pavamāna (Soma) purify me.

जिस पवित्र के द्वारा देवगण सदा अपने को पवित्र करते हैं, उस सहस्रों धार वाले पवित्र से पवमान सोम मुझे पवित्र करे।

७३. प्राजापत्यं पवित्रं शतोद्यामं हिरण्मयम्।
तेन ब्रह्मविदो वयं पूतं ब्रह्म पुनातु मा॥ १४॥ *

The *pavitra* (the purifying grass), belonging to Prajāpati, raised hundredfold, golden-coloured, by that we are *brahmavids*, the knowers of *Brahman* (prayer). Let the purified *Brahman* purify me.

प्रजापति से उत्पन्न, सहस्र शाखाओं वाला जो स्वर्णमय पवित्र है, उसमें हम लोग प्रक्षालित हुये हैं। पवित्र हुआ मन्त्र मुझे पवित्र करे।

७४. पावमानीः स्वस्त्ययनीर्याभिर्गच्छति नान्दनम्।

पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति॥ १५॥ *

The *pāvamanī ṛks*, leading to welfare *par excellence*, and with which one goes to paradise, (verily with those) the meritorious man enjoys there the fruits of his meritorious deeds and attains immortality.

कल्याण की ओर ले जाने वाली ये पावमानी ऋचायें, जिनके द्वारा व्यक्ति आनन्द-कानन स्वर्गलोक को प्राप्त होता है, (उन्हीं के द्वारा वह) सम्पूर्ण पुण्यों के फलों को भोगता है, तथा (अन्त में) अमृतत्त्व को प्राप्त होता है।

७५. पावमानं पितृन्देवान् ध्यायेद्यश्च सरस्वतीम्।

पितृंस्तस्योप तिष्ठेत क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्॥ १६॥ * [२१]

One who meditates upon *pāvamāna (sūkta)*, forefathers, gods and Sarasvatī, the milk, clarified butter, honey, and waters (offered by him to them) reside with the forefathers.

जो व्यक्ति पवमान (सूक्त), पितरों, देवताओं तथा सरस्वती का ध्यान करता है, उसके द्वारा प्रदत्त दूध, घृत, मधु तथा जल पितरों को प्राप्त होता है।

७६. ऋषयस्तु तपस्तेपुः सर्वे स्वर्गजिगीषवः।

तपसस्तपसोऽग्र्यं तु पावमानीर्ऋचो जपेत्॥ १७॥ *

All the seers, desirous of going to heaven, performed penance. But because of being the supreme among all penances, one should chant verily the *pāvamanī ṛks*.

स्वर्ग जाने की इच्छा वाले सभी ऋषियों ने तपस्या की, किन्तु प्रत्येक प्रकार की तपस्या से, श्रेष्ठ पावमानी ऋचाओं का जप करना चाहिये।

७७. पावमानं परं ब्रह्म ये पठन्ति मनीषिणः।

सप्त जन्म भवेद् विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः॥ १८॥ *

The wise ones, who read the *Pāvamāna-(Sūkta/Maṇḍala)*, the great *Brahman*, become enlightened (*vipra*), up to their seven births, prosperous and having gone through the study of the Veda up to the end.

(इस) पावमान (सूक्त/मण्डल) रूप परम ब्रह्म का जो मनीषी सदा पाठ करते हैं, वे सात जन्म तक विप्र, धनी तथा वेद का अन्त तक पारायण करने वाले होते हैं।

७८. दशोत्तराण्यृचां चैतत्पावमानीः शतानि षट्।
एतज्जुह्वञ्जपंश्चैव घोरं मृत्युभयं जयेत्॥ १९ ॥ *

A person, offering oblations, and reciting the *pāvamānī ṛks* six hundred and ten in number conquers the fear of death.

दश अधिक छः सौ (६१०) इन पावमानी ऋचाओं से आहुतियाँ प्रदान करता हुआ, तथा जप करता हुआ व्यक्ति घोर मृत्यु के भय को जीत जाता है।

७९. पावमानं परं ब्रह्म शुक्रं ज्योतिः सनातनम्।
ऋषींस्तस्योप तिष्ठेत क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्॥ २० ॥ *

[२२] (ख)

(One who meditates upon) the *pāvamāna* (*sūkta*), the great prayer, the lustrous, shining and the eternal, the milk, clarified butter, honey and water (offered by him), reach the seers.

यह पावमान (मण्डल) परं ब्रह्म है, तथा प्रकाशमान सनातन ज्योति है। (जो इसका पारायण करता है)। उसका दूध, घृत, मधु तथा जल ऋषियों के पास पहुँचता है।

Sūkta IX.115

८०. यत्र तत्परमं पदं विष्णोर्लोके महीयते।
देवैः सुकृतकर्मभिस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव॥ १ ॥ *

Where that Supreme abode of Viṣṇu is exalted in the space by the Gods and by the doers of meritorious deeds, they make me immortal; O Soma! flow forth for Indra.

जहाँ वह विष्णु का परम पद सर्वोच्च लोक में देवताओं तथा शुभ-कर्म करने वाले मनुष्यों के द्वारा प्रशंशित है, वहाँ हे सोम, मुझे अमृतत्व को प्राप्त कराओ तथा इन्द्र के लिये चारों तरफ से निरन्तर प्रवाहित होवो।

८१. यत्र तत्परमाव्यं भूतानामधिपतिः।
भावभावी च योगीश्च तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव॥ २ ॥ *

Where there is that Supreme refuge, (where) the Lord of all beings, the appreciator of feelings or sentiments (resides) and (to where) the contemplative saint (go), they make me immortal; O Soma! flow forth for Indra.

जहाँ पर सर्वश्रेष्ठ (आत्माओं का) आश्रय है; (जहाँ) सभी प्राणियों के स्वामी हैं; (जहाँ) भावनाओं से प्रभावित होने वाले तथा योगी हैं; वहाँ हे सोम मुझे अमृतत्व को प्राप्त कराओ तथा इन्द्र के लिये चारों तरफ से सदा प्रवाहित होवो।

८२. यत्र॑ दे॒वा म॒हात्मा॑नः॒ सेन्द्रा॑श्च सम॒रुद्ग॑णाः।
ब्र॒ह्मा च॒ यत्र॒ विष्णु॑श्च॒ तत्र॒ माम॒मृतं॑ कृ॒धीन्द्रा॑येन्दो॒ परि॑ स्रव॥ ३॥ ★

Where do reside the gods, the great souls along with Indra and the band of Maruts, where (do reside) Brahmā and Viṣṇu, there make me immortal; O Soma! flow forth for Indra.

जहाँ पर इन्द्र-सहित तथा मरुद्गण-सहित सभी देव तथा महात्मा लोग हैं; जहाँ ब्रह्मा तथा विष्णु हैं; वहाँ हे सोम, मुझे अमृतत्व प्रदान करो तथा इन्द्र के लिये चारों तरफ से निरन्तर प्रवाहित होवो।

८३. यत्र॒ लोक्या॑स्तनू॒त्यजा॑ः श्र॒द्धया॒ तप॑सा जि॒ताः।
तेज॑श्च॒ यत्र॒ ब्रह्म॑ च॒ तत्र॒ माम॒मृतं॑ कृ॒धीन्द्रा॑येन्दो॒ परि॑ स्रव॥ ४॥ ★

Where meritorious persons, risking their lives attain that abode by observing reverence and penance; where there is brilliance and the *Brahman* (prayer); there make me immortal; O Soma! flow forth for Indra.

जहाँ शरीर का परित्याग करने वाले लोगों ने श्रद्धा और तप से उस स्थान को प्राप्त किया है; जहाँ तेज और ब्रह्म है; वहाँ हे सोम, मुझे अमृतत्व प्रदान करो तथा इन्द्र के लिये चारों तरफ से निरन्तर प्रवाहित होवो।

८४. यत्र॒ गङ्गा॑ च य॒मुना॒ यत्र॒ प्राची॒ सर॑स्वती।
यत्र॑ सो॒मेश्व॑रो दे॒वस्तत्र॒ माम॒मृतं॑ कृ॒धीन्द्रा॑येन्दो॒ परि॑ स्रव॥ ५॥ ★ [२८

Where there are Gaṅgā and Yamunā rivers; where the Sarasvatī flows toward the east; where there is Lord Someśvara; there make me immortal; O Soma, flow fort for Indra.

जहाँ गंगा और यमुना (प्रवाहित होती हैं); जहाँ पूर्व की ओर सरस्वती (प्रवाहित हो रही) जहाँ सोमेश्वर देव हैं; वहाँ हे सोम, मुझे अमृतत्व प्रदान करो तथा इन्द्र के लिये चारों तरफ से निरन्तर प्रवाहित होवो।

Sūkta X.9

८५. सुस्तुषीस्तदुपसो दिवा नक्तं च सुस्तुषीः। वरेण्यक्रतुरहमा देवीरवसे हुवे॥ १०॥ ★ [५]

Having excellent intelligence, I invoke for our protection the goddesses (waters) which are ever-flowing, having it as their mission, and ever-flowing in the day and the night.

श्रेष्ठ बुद्धि वाला मैं, सदा प्रवाहित होते रहना ही जिनका कर्म है, उन सदा दिन-रात प्रवाहित होने वाली जल-देवियों का अपनी रक्षा के लिए आह्वान करता हूँ।

Sūkta X.75

८६. सितासिते सरिते यत्र संगे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।
ये वै तन्वं१ वि सृजन्ति धीरास्ते वै जनासो अमृतत्वं भजन्ते॥ ६॥ ★

Where the two rivers white (Gaṅgā) and black (Yamunā) flow forth together, there taking bath, persons go to heaven. The wise ones, who give up their body there, verily those men attain immortality.

जहाँ सफेद जल वाली (गंगा) तथा कृष्ण जल वाली (यमुना) एक साथ (संगम रूप में प्रवाहित होती) हैं, वहां स्नान करने वाले स्वर्ग प्राप्त करते हैं। जो बुद्धिमान वहाँ (संगम पर) शरीर का त्याग करते हैं, वे ही व्यक्ति अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।

Sūkta X.85

८७. अविधवा भव वर्षाणि शतं साग्रं तु सुव्रता।
तेजस्वी च यशस्वी च धर्मपत्नी पतिव्रता॥ ४८॥ ★

(O bride!) be not a widow for hundred years; devoted to your husband be ahead in observing common duties, illustrious, glorious, (as a) guardian of *dharma*.

हे वधू! सौ वर्ष तथा उसके आगे भी तुम सौभाग्यवती, सुन्दर व्रत वाली, तेजस्विनी, यशस्विनी, धर्म का पालन करने वाली तथा पतिव्रता होवो।

८८. जनयद् बहुपुत्राणि मा च दुःखं लभेत् क्व चित्।
भर्ता ते सोमपा नित्यं भवेद्धर्मपरायणः॥ ४९॥ ★

(O bride!) giving birth to many sons, may you never get any problems in life; may your husband always be the protector of Soma, and devoted to his duty.

(हे वधू,) तुम अनेक पुत्रों को जन्म देती हुई कभी भी दु:ख को प्राप्त न होवो। सोमयज्ञ का सम्पादन करता हुआ तुम्हारा पति नित्य धर्म का आचरण करने वाला होवे।

८९. अष्टपुत्रा भव त्वं च सुभगा च पतिव्रता।
भर्तुश्चैव पितुर्भ्रातुर्हृदयानन्दिनी सदा॥ ५०॥ ★

(O bride!), you be the mother of eight sons, fortunate, devoted to your husband; and (you) always be comforting to the father and brother of your husband.

(हे वधू,) तुम सुन्दर सौभाग्य वाली आठ पुत्रों को जन्म देने वाली तथा पातिव्रत्य धर्म का पालन करने वाली होवो। अपने पति के पिता (श्वसुर) तथा भाई (देवर) के हृदय को सदा आनन्द देने वाली होवो।

९०. इन्द्रस्य तु यथेन्द्राणी श्रीर्धरस्य यथा श्रिया।
शङ्करस्य यथा गौरी तद्भर्तुरपि भर्तरि॥ ५१॥ ★

As Indrāṇī (was very much dear) to Indra, Śrī and Lakṣmī to Viṣṇu and Gaurī to Śaṅkara, (O bride, you be dear to your husband); even more than they were (to their husbands).

जिस प्रकार इन्द्र के लिये इन्द्राणी, विष्णु के लिये श्री तथा लक्ष्मी एवं शंकर के लिये गौरी थीं, उनसे भी अधिक अपने पति के प्रति प्रेम करने वाली होवो।

९१. अत्रेर्यथानसूया स्याद् वसिष्ठस्याप्यरुन्धती।
कौशिकस्य यथा सती तथा त्वमपि भर्तरि॥ ५२॥ ★

As Anasūyā was (dear) to Atri, Arundhatī to Vasiṣṭha and Satī to Kauśika (Viśvāmitra); likewise you be (dear) to your husband.

जिस प्रकार अत्रि ऋषि की पत्नी अनसूया थी, वसिष्ठ की पत्नी अरुन्धती थी, विश्वामित्र की पत्नी सती थी, वैसे ही तुम अपने पति के लिये होवो।

९२. ध्रुवैधि पोष्या मयि मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावती सं जीव शरदः शतम्॥ ५३॥ ★ [२९]

(O wife,) be stable, you are always to be nurtured by me. The Bṛhaspati has given you to me; (you be) giver of birth to progeny with me (your) husband. You live long together (with me) for hundred years.

(हे वधू), मेरे द्वारा सदा पोषण के योग्य तुम मेरे प्रति सदा अटल होवो। बृहस्पति ने तुमको मुझे प्रदान किया है। मुझ पति के द्वारा तुम सुन्दर सन्तान वाली होवो तथा सौ वर्ष तक एक साथ जीवो।

Sūkta X.95

१३. उदप्पताम वसतेर्वयो यथा रिणन्त्वा भृगवो मन्यमानाः।
पुरूरवः पुनरस्तं परेह्या मे मनो देवजना अयासुः॥ १९॥ ★ [४]

I have flown away as a bird from its nest; (lest) the Bhṛgus kill you thinking themselves superior; O Purūravas, go back to your house; the gods have overpowered my mind.

मैं दूर उड़ चुकी हूँ, जैसे पक्षी अपने घोंसले से; भृगु लोक अपने को बड़ा मानते हुए तुमको कहीं हिंसित न कर दें, (इसलिये) हे पुरूरवा, तुम पुनः अपने घर लौट जाओ; देवजनों ने मेरे मन को अभिभूत कर दिया है।

Sūkta X.97

१४. यच्च कृतं यदकृतं यदेनश्चकृमा वयम्।
ओषधयस्तस्मात्पान्तु दुरितादेनसस्परि॥ २४॥ ★ [११]

What has been done and what not done; whatever sin we have committed; may the herbs protect from the wrong-doing and take us out from the sin.

जो कुछ (मेरे द्वारा) किया गया है अथवा (अभी) नहीं किया गया है, और जिस पाप को हमने किया है, ओषधियाँ उन दुष्कर्मों से मेरी रक्षा करें और उस पाप से पार करें।

Sūkta X.103

१५. असौ या सेना मरुतः परेषाम्भ्यैति न ओजसा स्पर्धमाना।
तां गूहत तमसापव्रतेन यथामीषाम्न्यो अन्यं न जानात्॥ १४॥ ★

O Maruts, this army of others (enemies), which comes to us fighting with a view to conquering us by power, you hide it with darkness by making it inactive, so that none among them could know each other.

हे मरुतो, दूसरे शत्रुओं की जो यह सेना अपनी शक्ति से हमारे साथ स्पर्धा करती हुई हमारी ओर आ रही है, उसको तुम निष्क्रिय बनाते हुये अन्धकार में छिपा दो, ताकि उनमें एक-दूसरे को न जान सके।

१६. अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणो अहयइव।
तेषां वो अग्निदग्धानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम्॥ १५॥ ★ [२३]

(O enemies), be blind and friendless like hoodless serpents. Let Indra kill the chieftains among you who have been burnt with fire.

(हे शत्रुओ) तुम लोग शिररहित सर्प की तरह अन्धे तथा मित्ररहित हो जावो। अग्नि से जले हुये तुम लोगों में से जो-जो बड़ा योद्धा है, उसको इन्द्र मारे।

Sūkta X.106

९७. हविर्भिरेके स्वरितः सचन्ते सुन्वन्त एके सवनेषु सोमान्।
शचीर्मदन्त उत दक्षिणाभिर्नेज्जिह्मायन्त्यो नरकं पताम॥ १२॥ ★ [२]

Some go to heaven from here by offering oblations (to the gods); some others press Soma in the (morning, midday and evening) with a desire to go to heaven; some others praising (the gods) with *mantras* (*ṛk*s, *yaju*s and *sāman*s) and giving sacrificial fee (to the *ṛtvik*s) go to heaven; lest we by committing sin go down to hell.

कुछ लोग (देवताओं को) हविः प्रदान कर यहाँ से स्वर्ग को प्राप्त करते हैं; कुछ दूसरे लोग, सोमयागों में (इन्द्र को) सोम प्रदान कर शची को आनन्दित करते हुये (स्वर्ग प्राप्त करते हैं), और दूसरे यज्ञ में दक्षिणादि देकर (स्वर्ग प्राप्त करते हैं)। (इन तीनों कर्मों से वंचित) हम लोग निन्दित कर्म करते हुये कहीं नरक को न प्राप्त होवें।

Sūkta X.128

९८. आ रात्रि पार्थिवं रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदांसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥ १॥ ★

O Night (*rātri*), the terrestrial region has been filled with the power and might of the Father (*dyaus*). You have spread forth high unto the seats of heaven. The darkness, striking with fear, spreads everywhere.

हे रात्रि, यह पृथिवीलोक पिता (द्यौ) के बल से चारों तरफ से व्याप्त है। तुम द्युलोक के सभी स्थानों को ऊंचाई तक व्याप्त कर स्थित हो। दीप्तिमान आकाश तक अन्धकार फैला है।

९९. ये ते रात्रि नृचक्षसो युक्तासो नवतिर्नव।
अशीतिः सन्त्वष्टा उतो ते सप्त सप्ततिः॥ २॥ ★

O Night, your watching men (gods) who are engaged in looking after the mankind are ninety-nine, eighty-eight, and seventy-seven in number.

हे रात्रि, मनुष्यों को देखने वाले देव, जो तुम्हारे द्वारा नियुक्त हैं, वे निन्यानवें (९९), अट्ठासी (८८) तथा सतहत्तर (७७) संख्या में हैं।

१००. रात्रीं प्र पद्ये जननीं सर्वभूतनिवेशनीम्।
भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्॥ ३॥ ★

I approach the Night, the mother, bringing rest to all beings, the auspicious one, possessing good fortune, dark and the sleeping place of all moving ones.

सभी प्राणियों को आश्रय देने वाली माता, कल्याण करने वाली तथा सम्पूर्ण जगत् को सुलाने वाली कृष्णवर्णा भगवती रात्रि की शरण में आता हूँ।

१०१. संवेशनीं संयमनीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम्।
प्रपन्नोऽहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि॥ ४॥ ★

I have come to the auspicious Night, (who is) causing (all) to rest, controlling all, and putting on the garland of constellations and stars. O auspicious one, may we cross your boundary.

सबको निवास देने वाली, सबका सम्यक् प्रकार से एक साथ नियन्त्रण करने वाली, ग्रहों एवं नक्षत्रों की माला धारण करने वाली तथा सबका कल्याण करने वाली रात्रि की शरण में उपस्थित हूँ। हे सबका कल्याण करने वाली (रात्रि), मैं तुमको पार करूँ।

१०२. दुर्गेषु विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे। अग्निचोरनिपुतेषु सर्वग्रहनिवारणे॥ ५॥ ★

In impassable (places), in uneven, terrible battlefield, in the attacks of fire and thieves and in removing the ill effects of all the planets (we approach Durgā).

दुर्गमनीय, उबड़-खाबड़ स्थानों में, घोर संग्राम में, शत्रु संकट में, अग्नि एवं चोरों से प्राप्त संकट में, तथा सभी ग्रहों के बुरे प्रभावों के निवारण में (हम दुर्गा की शरण में आते हैं)।

१०३. दुर्गेषु विषमेषु त्वं संग्रामेषु वनेषु च।
नमस्कृत्वा प्र पद्यन्ते तेषां नो अभयं कुरु॥ ६॥ ★

O Durgā, the persons who approach you offering their salutations to you in impassable, uneven, battlefields and forests, you grant fearlessness to them and to us.

दुर्गम स्थानों में, विषम परिस्थितियों में, युद्धों में तथा जंगलों में (जो तुम्हें) नमस्कार करके तुम्हारी शरण में जाते हैं, उनको तथा हमें भयरहित करो।

१०४. आदित्यवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं चन्द्रसहस्रदीप्तिम्।
देवीं कुमारीमृषिपूजितां तां तां दुर्गमातां शरणं प्र पद्ये॥ ७॥ *

I approach, for protection, the mother Durgā, possessing colour of the sun, shining with penance, belonging to the sun, having the brilliance of thousands of moons, the goddess, the celibate, and worshipped by the seers.

आदित्य के समान वर्ण वाली, तप से प्रदीप्त, सूर्य सदृश विविध प्रकाश वाली, हजारों चन्द्रमा की कान्ति वाली, सदा कुमारी रहने वाली तथा ऋषियों द्वारा पूजित, ऐसी देवी दुर्गा माता की शरण में उपस्थित होता हूँ।

१०५. क्षीरेण स्नापिता दुर्गा चन्दनेनानुलेपिता।
बैल्वपत्रकृतामाला नमो दुर्गे नमो नमः॥ ८॥ *

Durgā has been bathed with milk, besmeared with sandal, adorned with the garland of *bilva*-leaves. O Durgā, I bow down to you; I bow down.

जो दूध से स्नान कराई गई है, जिसका चन्दन से अनुलेप किया गया है, जिसने बिल्व-पत्रों की माला धारण की है, ऐसी हे दुर्गा, तुम्हें बार-बार नमस्कार है।

१०६. सर्वभूतपिशाचेभ्यः सर्वशत्रुसरीसृपैः।
देवेभ्यो मानुषेभ्यश्चोभयेभ्यो माभि रक्षताम्॥ ९॥ * [१५]

O Durgā, protect me from all sides from all the *bhūta*s and *piśāca*s (evil spirits), ,all enemies including serpents and both divine and human beings.

हे दुर्गा, सभी भूत-पिशाचों से, रेंगकर चलने वाले सर्पादि सभी शत्रुओं से, देव (प्रकोपों) से, मनुष्यकृत बाधाओं से तथा दोनों से उत्पन्न बाधाओं से मेरी रक्षा करो।

१०७. ऋग्वेदे स्तुतया देवी काश्यपेनोदाहृता।
जातवेदप्रभा गौरी जातवेदसे सुनवाम सोमम्॥ १०॥ *

Because of being praised in the *Ṛgveda*, the Goddess Gaurī, having the brilliance of fire, has been referred to by Kāśyapa. May we press the Soma for Jātavedas Agni.

ऋग्वेद में जो देवी स्तुति की गई है, जो काश्यप के द्वारा उदाहृत है, वह गौरी अग्नि की प्रभावाली है; उस जातवेदस्-रूपा देवी के लिये हम सोम का सवन करें।

१०८. सुरासुरैर्द्विजवरैः पिशाचासुरराक्षसैः।
अरातिभयमुत्पन्नमरातीयतो नि दहाति वेदः॥ ११॥ *

The fear caused by the enemies, by the gods, demons, brāhmaṇas; (and also by) *piśācas*, *asuras* and *rākṣasas*; may (Jātavedas) consume the wealth of those who have enmity against us.

सुर, असुर, द्विज, पिशाच, असुर तथा शत्रुओं के द्वारा जो भय उत्पन्न है, उन सभी शत्रुता करने वालों के धन को अग्नि जलावे।

१०९. राजद्वारे पथे घोरे संग्रामेषु च गौतमी।
सर्वं रक्षतु दुरितं स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा॥ १२॥*

May Gautamī protect us from all evils, whether at the door of the king, (or) on the terrible path, (or) in the battlefields. May he (the Jātavedas Agni) make us cross over all the difficulties.

राजा के घर पर, रास्ते में, घोर संग्राम में जो कुछ दुष्कर्म हुआ है; उससे गौतमी मेरी रक्षा करे। वह जातवेदस् (अग्नि) हमें सभी विपत्तियों से पार करे।

११०. महद्भये समुत्पन्ने स्मरन्ति च जपन्ति च।
सर्वं तारयते दुर्गा नावेव सिन्धुं दुरितान्यग्निः॥ १३॥*

(The persons) who remember and chant the praises of Goddess Durgā at the commencement of any great fear, she makes them cross over all the difficulties. The Jātavedas Agni makes one cross over the evil-doings as someone crosses over a river by a boat.

किसी भी महान् भय के उत्पन्न होने पर जो व्यक्ति दुर्गा का स्मरण करते हैं तथा जप करते हैं, दुर्गा उनको सभी प्रकार के भय से पार करती है; अग्नि सभी दुष्कृतों से पार करता है जैसे नाव से नदी।

१११. य इमं स्तवं दुर्गायाः शृण्वन्ति च पठन्ति च।
त्रिषु लोकेषु विख्यातं त्रिषु लोकेषु पूजितम्॥ १४॥ *

Whosoever hear and read the praise of Durgā, he becomes well known in the three *lokas*; and he is also worshipped throughout the three *lokas*.

जो व्यक्ति दुर्गा के इस स्तवन को सुनता है तथा पढ़ता है, वह तीनों लोकों में विख्यात होता है तथा तीनों लोकों में पूजा जाता है।

११२. अपुत्रो लभते पुत्रान् धनहीनो धनं लभेत्।
अचक्षुर्लभते चक्षुर्बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥ १५॥ *

The son-less (person) gets sons; the wealthless (person) gets wealth; the blind gets eyesight, and the captive gets freedom from bondage.

पुत्रहीन व्यक्ति पुत्र प्राप्त करता है; निर्धन धन प्राप्त करता है; दृष्टिहीन दृष्टि प्राप्त करता है; बन्धनयुक्त व्यक्ति बन्धन से मुक्त होता है।

११३. व्याधितो मुच्यते रोगादरोगी श्रियमाप्नुयात्।
सर्वं कामं त्वं ददासि नारायणि नमोऽस्तु ते। कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥ १६॥ ★ [१६]

One, afflicted with disease, gets freedom from disease, and the diseaseless person gets prosperity. O Nārāyaṇī, you fulfil all desires. My salutation to you; O Kātyāyanī, my salutation to you.

रोगी रोग से मुक्त होता है; निरोग व्यक्ति धन प्राप्त करता है; हे (दुर्गा) तुम सभी कामनाओं की पूर्ति करती हो; हे नारायणी, तुम्हें नमस्कार है; हे कात्यायनी, तुम्हें नमस्कार है।

११४. केशी वै सर्वभूतानां पञ्चमीति च नाम च।
सा मां सामेति वै देवी सर्वतः परि रक्षति सर्वतः परि रक्षत्यों नमः॥ १७॥ ★

Verily Devī is *keśī* (having rays) for all beings and she bears the name of *pañcamī*. She is verily *sāman* being 'सा मां' 'she for me'. As such, the Goddess protects me from all sides; Protects from all sides; My salutation to her.

(वह देवी) सभी प्राणियों को प्रकाश देने वाली (केशी) तथा पञ्चमी ऐसा नाम वाली है "वह मुझे" (सा मां) इस रूप में वह देवी "सामन्" रूपा है। (वह) सभी प्रकार से रक्षा करती है; वह सभी प्रकार से रक्षा करती है। उस देवी को नमस्कार है।

११५. स्तोष्यामि प्रयतो देवीं शरण्यां बह्वृचप्रियाम्।
सहस्रसंमितां दुर्गां जातवेदसे सुनवाम सोमम्॥ १८॥ ★

Having become purified, I shall praise the Goddess Durgā, who is the shelter for all, beloved to the *bahvṛcas* (the Ṛgvedins) and equal to thousands. I may press Soma for Jātavedas.

पवित्र होकर उस देवी की, जो सबको शरण प्रदान करने वाली है, ऋग्वेदियों को प्रिय है तथा अनेक रूप वाली (सहस्रसंमिता) है, उस दुर्गा की मैं स्तुति करूँगा। जातवेदस् अग्नि के लिये हम सोम का सवन करें।

११६. शान्त्यर्थं तद् द्विजातीनामृषिभिः समुपाश्रिता।
ऋग्वेदे त्वं समुत्पन्नारातीयतो नि दहाति वेदः॥ १९॥ ★

(The Goddess) is worshipped by the seers with a view to bringing welfare for all (the twice-borns *dvijas*). (O Goddess,) you have got your birth in the *Ṛgveda*. (May the Goddess) consume the wealth of those who have enmity with us.

द्विजों की शान्ति के लिये ऋषियों के द्वारा उस देवी की उपासना की गई थी। (हे देवी), तुम ऋग्वेद में उत्पन्न हुई थी। जातवेदस् अग्नि शत्रुता करने वालों के धन को जलावे।

११७. ये त्वां देवि प्रपद्यन्ते ब्राह्मणा हव्यवाहनीम्।
अविद्यो बहुविद्यो वा स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा॥ २०॥ ★

O Goddess, the brāhmaṇas, whether illiterate or very learned, who approach you, the oblation-bearer, (you protect them); May she make us all cross over all the difficulties.

हे देवी, जो ब्राह्मण, चाहे विद्याहीन हो या जो बहुत विद्वान् हो, हव्य का वहन करने वाली तुम्हारी शरण में जाता है, (वह सभी बाधाओं से मुक्त हो जाता है)। वह अग्नि सम्पूर्ण दुर्गम बाधाओं से हमें पार करे।

११८. तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्र पद्ये सुतरसि तरसे नमः सुतरसि तरसे नमः॥ २१॥ ★

I approach for shelter that Goddess Durgā, possessing the colour of Agni, shining with penance, belonging to the sun, and the lover of the fruits of action. O well-crosser (Goddess), salutation to you, who makes one cross over (the worldly troubles). O well-crosser, salutation to you, who make one cross over (the worldly troubles).

अग्नि के समान वर्ण वाली, तप से (सूर्य के समान) सदा प्रज्वलित रहने वाली, कर्म फलों में प्रेम रखने वाली, उस दुर्गा की शरण में मैं जाता हूँ। हे अच्छी प्रकार से पार करने वाली, तुझ पार करने वाली के लिये नमस्कार है; हे अच्छी प्रकार से पार करने वाली, तुझ पार करने वाली के लिये नमस्कार है।

११९. दुर्गा दुर्गेषु स्थानेषु शं नो देवीरभिष्टये।
इमं दुर्गास्तवं पुण्यं रात्रौरात्रौ सदा पठेत्॥ २२॥ ★

One should always read the meritorious praise of Durgā, viz. *śaṁ no devī abhiṣṭaye*, every night at the places of Durgā.

सभी दुर्गा-स्थानों पर "शं नो देवीरभिष्टये" इस पवित्र दुर्गास्तवन का प्रत्येक रात्रि सदा पाठ करना चाहिये।

All the prosperities — high-up in strength, victory in the battle, victory in the assembly, and conquering of the wealth — are placed in this gold.

शक्ति में सर्वोच्चता, युद्ध में विजय, सभा में विजय, धन की विजय — ये सम्पूर्ण समृद्धियां, इस हिरण्य में समाविष्ट हैं।

१२४. शुनमहं हिरण्यस्य पितुर्मानेव जग्रभ। तेन मां सूर्यत्वचमकरं पूरुषु प्रियम्॥ ३॥ ★

I have taken possession of the auspicious gold as the prestige of (my) father. With that I have made my body with shining skin like sun, lovely among the clan of Pūrus (to look at).

मैंने कल्याणकारी हिरण्य को अपने पिता के सम्मान की तरह ग्रहण किया है; उसके द्वारा मैंने अपने शरीर को सूर्य की तरह चमकने वाला तथा पूरुवंशियों में प्रिय बनाया है॥ ३॥

१२५. सम्राजं च विराजं चाभिष्टिर्यां च मे ध्रुवा।
लक्ष्मी राष्ट्रस्य या मुखे तया मामिन्द्र सं सृज॥ ४॥ ★

The kingship, sovereignty and the protection (of Indra) which is my stability, and the Lakṣmī, i.e. the glory, which is in the mouth of a nation, with that O Indra, make me united.

साम्राज्य, सार्वभौम शासन तथा (इन्द्र का) संरक्षण, जो मेरी स्थिरता है, (तथा) लक्ष्मी जो राष्ट्र के मुख में है, हे इन्द्र, उस (लक्ष्मी) के साथ हमें संयुक्त करो।

१२६. अग्नेः प्रजातं परि यद्धिरण्यममृतं जज्ञे अधि मर्त्येषु।
य एनद् वेद स इदेनदर्हति जरामृत्युं भवति यो बिभर्ति॥ ५॥ ★ [२०]

The gold, born of Agni, has been born as immortal among the mortals; who knows it, verily he worships it; who bears it, his death comes not before old age.

अग्नि से उत्पन्न जो हिरण्य है, वह मानो मनुष्यों में अमृत के रूप में उत्पन्न हुआ है; जो उसको जानता है, वही उसको (रखने) के योग्य है; जो उसको धारण करता है, वृद्धावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त होने वाला होता है (पहले नहीं)।

१२७. यद्वेद राजा वरुणो यदु देवी सरस्वती।
इन्द्रो यद् दस्युहा वेद तन्मे वर्चस आयुषे॥ ६॥ ★

That which knows the King Varuṇa, which knows the Goddess Sarasvatī, which knows Indra, the killer of demons, may that (gold) be for my vital power and longevity.

१२०. रात्रिः कुशिकः सौभरो रात्रिस्तवं गायत्री।
रात्रीसूक्तं जपेन्नित्यं तत्कालमुपं पद्यते॥ २३॥ ★ [१७]

Rātri, the night (is the deity), Kuśika Saubhara (is the seer), *Rātri-stava* (is the *sūkta*), *Gāyatrī* (is the metre); one should chant the *Rātri-sūkta* daily; it gives its fruit immediately.

(इस सूक्त की देवता) रात्रि, (ऋषि) कुशिक सौभर, (इसमें) रात्रि की स्तुति तथा गायत्री छन्द है। इस रात्रि-सूक्त का नित्य जप करना चाहिये। (इससे) इसका तत्काल फल प्राप्त होता है।

Sūkta X.129 (128)

१२१. अर्वाञ्चमिन्द्रमुतो हवामहे यो गोजिद्धनजिदश्वजिद्यः।
इमं नो यज्ञं विहुवे जुषस्वास्य कुर्मो हरिवो मेदिनं त्वा॥ १०॥ ★ [१९] {१०}

We invoke Indra from afar towards us, who is the conqueror of cows, conqueror of wealth and the conqueror of horses. O possessor of swift-going horses, listen to this sacrifice of ours in this invocation. We make you our companion.

वहाँ से इन्द्र को, जो गायों को जीतने वाला, धन को जीतने वाला तथा जो अश्व को जीतने वाला है, हम अपनी ओर बुलाते हैं। हमारे आह्वान करने पर इस यज्ञ को स्वीकार करो। हे शीघ्र दौड़ने वाले हरि-संज्ञक अश्वों वाले इन्द्र, हम तुम्हें यहाँ शक्तिशाली बनाते हैं।

Sūkta X.130

१२२. आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदम्।
इदं हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्राया विशतादु माम्॥ १॥ ★

May this gold, which is the preservative of life, bestowing vital power, supporting wealth, breaking through the earth and accompanied by vigour, come to me for my victory.

आयुष्य प्रदान करने वाला, वर्चस्वी बनाने वाला, धन की पुष्टि प्रदान करने वाला, पृथिवी के अन्दर से निकलने वाले वर्चस् से युक्त यह हिरण्य विजय के लिये मेरे पास आवे।

१२३. उच्चैर्वाजि पृतनाषाट् संभासाहं धनञ्जयम्।
सर्वाः समग्रा ऋद्धयो हिरण्येऽस्मिन्त्समाहिताः॥ २॥ ★

जिस (हिरण्य) को राजा वरुण जानता है, जिसको देवी सरस्वती जानती है, दस्युओं का वध करने वाला इन्द्र जिसको जानता है, वह (हिरण्य) मेरे वर्चस् तथा आयुष्य के लिये होवे।

१२८. न तद्रक्षांसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः।
स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥ ७॥ ★

Neither the *rākṣasas*, the demons, nor the *piśācas*, the devourers overpower it, because it is the first-born strength of the gods. Whosoever bears the *dākṣāyaṇa-hiraṇya*, he enjoys his longevity among the gods; he attains longevity among the men.

उस (हिरण्य) को न तो राक्षस और न ही पिशाच अभिभूत कर सकते हैं, क्योंकि देवताओं का वह प्रथम उत्पन्न बल है। जो दाक्षायण-हिरण्य को धारण करता है, वह देवों में अपनी आयु को दीर्घ बनाता है, वह मनुष्यों में अपनी आयु को दीर्घ बनाता है।

१२९. यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥ ८॥ ★

When with auspicious mind the sons of Dakṣa (dexterous priests) bound the *dākṣāyaṇa-hiraṇya* for the king Śatānīka (one having 100 armies); verily that (gold) I put on me for hundred years, so that I may have long life attaining old age.

दक्ष के पुत्रों (निपुण-पुरोहितों) ने सुन्दर मन से जिस दाक्षायण-हिरण्य को शतानीक के लिये बाँधा था, उसी को मैं अपने सौ वर्षों तक जीवित रहने के लिये बाँधता हूँ, जिससे मैं वृद्धावस्था तक जीने वाली दीर्घ आयु को धारण करने वाला बनूं।

१३०. घृतादुल्लुप्तं मधुमत् सुवर्णं धनञ्जयं धरुणं धारयिष्णुम्।
क्रृणक् सपत्नानधराँश्च कृण्वदा रोह मां महते सौभगाय॥ ९॥ ★

May the gold, drawn forth from the clarified butter, full of mead, conquering wealth, the supporter and capable of bearing, drive off foes and cause them to go down. (O gold), mount on me for the great good fortune.

घृत से निकला हुआ, मधु से युक्त, धन को जीतने वाला, दृढ़ता से धारण करने वाला तथा सदा धारण करने की इच्छा वाला (हिरण्य) है, वह शत्रुओं को नष्ट करे तथा नीचे धकेले। (हे हिरण्य,) मेरे महान् सौभाग्य के लिये मेरे शरीर में आरूढ़ होवो।

१३१. प्रियं मा कुरु देवेषु प्रियं राजसु मा कुरु।
प्रियं विश्वेषु गोप्येषु मयि धेहि रुचा रुचम्॥ १०॥ ★

O gold, make me dear among the gods; make me dear among the kings; make me dear among all the protectors. (O gold), put in me the lustre with brightness.

(हे हिरण्य,) देवताओं में मुझे प्रिय बनाओ; राजाओं में मुझे प्रिय बनाओ; सभी रक्षकों में मुझे प्रिय बनाओ। (हे हिरण्य,) दीप्ति से दीप्तिमान (स्वर्ण) मेरे में धारण कराओ।

१३२. अ॒ग्निर्येन॑ वि॒राज॑ति॒ सूर्यो॒ येन॑ वि॒राज॑ति।
वि॒राड् येन॑ वि॒राज॑ति॒ तेना॒स्मान् ब्र॑ह्मणस्पते वि॒राज॑ स॒मिध॑ कुरु॥ ११॥ * [२१]

With which Agni shines forth, with which the sun shines forth, and with which *vitāṭ* shines forth; O Brahmaṇaspati (the Lord of Prayer), with that lustre make us sovereign and inspired.

अग्नि जिससे सुशोभित होता है; सूर्य जिससे सुशोभित होता है, विराट् जिससे सुशोभित होता है, उस तेज से हे ब्रह्मणस्पति, मुझे विशिष्ट रूप से सुशोभित होने वाला तथा प्रज्वलित बनाओ।

Sūkta X.145

१३३. हि॒मस्य॑ त्वा ज॒रायु॑णा॒ शाले॒ परि॑ व्ययामसि।
उ॒त ह्र॒दो हि नो॒ भुवो॒ऽग्निर्द॑दातु भेष॒जम्।
शी॒तह्र॑दो॒ हि नो॒ भुवो॒ऽग्निर्द॑दातु भेष॒जम्॥ १॥ *

O House, we enwrap you from all sides with outer skin of the snow; and you be a pond for us; let Agni give us medicament; be (like) a cooler pond for us; let Agni give us medicament.

हे गृह, हिम की पतली परत से तुमको चारों तरफ से आवेष्टित करता हूँ; तुम हमारे लिये एक सरोवर (के समान शीतल) होवो; अग्नि अपनी औषधि प्रदान करे; तुम हमारे लिये सरोवर होवो। अग्नि अपनी औषधि प्रदान करे।

१३४. अ॒न्ति॒काद॒ग्निर॑भवद्दु॒र्वाद॒ः शिशु॒राग॑मत्। अजा॑तपुत्रपुत्राया॒ हृद॑यं मम॑ दू॒यते॒॥ २॥ *

Let Agni be in vicinity; let child, speaking inexplicit words, come (here). Having given no birth to a child my heart is distressed.

अग्नि समीप में रहे; तुतले शब्द करने वाला शिशु हमारे घर में हो; जिसको कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ, उस माता का मेरा हृदय अत्यन्न पीड़ित हो रहा है।

१३५. वि॒पु॒लं वनं॑ ब॒ह्वा॑का॒शं चर॑ जातवे॒दः काया॑य।
मां च॒ रक्ष॑ पु॒त्राँश्च॑ श॒रणमु॒भौ तव॑॥ ३॥ *

O Jātavedas Agni, move as per your will in the vast forest, having a large sky. Protect me and my sons; both of us are in your shelter.

हे जातवेदस् अग्नि, विशाल आकाश से व्याप्त विस्तृत वन में तुम अपनी इच्छानुसार विचरण करो; मेरी रक्षा करो और मेरे पुत्रों की रक्षा करो; हम दोनों तुम्हारी शरण में हैं।

१३६. पिङ्गाक्ष लोहितग्रीव कृष्णवर्ण नमोऽस्तु ते।
अस्मान्नि बर्हीरस्योनं सागरस्योर्मयो यथा॥ ४॥ *

O Agni, the red-eyed, the red-necked, and the black-coloured, (my) salutation be to you; you remove away its deficiency from us like the waves of the ocean.

हे रक्त वर्ण के नेत्र वाले, हे लाल वर्ण की गर्दन वाले, हे कृष्ण वर्ण (के धूम) वाले, तुम्हें नमस्कार है। इस गृह की जो न्यूनता है, उसे हमसे अलग कर नष्ट करो, जिस प्रकार सागर की लहरें (अवांछित वस्तुओं को दूर फेंकती हैं)।

१३७. इन्द्रः क्षत्रं ददातु वरुणस्तमभि षिञ्चतु।
शत्रवो निधनं यान्तु जयं त्वं ब्रह्मतेजसा॥ ५॥ *

Let Indra give shelter (to you); let Varuṇa sprinkle water from all sides. Your enemies go to death and you get victory (over them) with the power of prayer.

इन्द्र शक्ति प्रदान करे, वरुण उसको अभिषिञ्चित करे, तुम्हारे शत्रु विनाश को प्राप्त हों; तुम अपने ब्रह्मतेज से विजय प्राप्त करो।

१३८. कपिलजटीं सर्वभक्षं चाग्निं प्रत्यक्षदैवतम्।
वरुणवशाँ ह्यऽग्निर्मम पुत्राँश्च रक्षतु॥ ६॥

(I take) Agni, having brownish hair and all-devouring as the visible god. Let Agni protect my sons, captured by Varuṇa.

पाण्डु वर्ण की जटा वाला तथा सब कुछ खाने वाला अग्नि ही प्रत्यक्ष देवता है; वरुण के पाश में फँसे मेरे पुत्रों की अग्नि रक्षा करे।

१३९. यावदादित्यस्तपति यावद् भ्राजति चन्द्रमाः।
यावद् वातः प्रवायति तावज्जीव तया सह॥ ७॥ *

As long as the Āditya shines; as long as the moon glitters; and as long as the wind blows; you live (in this house) till that time with her (wife).

जब तक आदित्य तपता है, जब तक चन्द्रमा चमकता है; जब तक वायु बहता है, तब तक (इस गृह में) उस (पत्नी) के साथ जियो।

१४०. एकशफैर्हस्तिनोद्देशैन् त्वं विपुलेन। पृथिवीं त्वं भुञ्ज्स्वैकच्छत्रेण दण्डेन॥ ८॥ ★

You enjoy the entire earth accompanied by ample horses, elephants, with one command under one umbrella with one order.

विपुल अश्वों एवं हाथियों से युक्त होकर एक छत्र के अन्दर एक दण्ड (आदेश) के द्वारा सम्पूर्ण पृथिवी का भोग करो।

१४१. येन केन प्रकारेण मेहनाकोऽपि जीवति।
परेषामुपकारार्थं यज्जीवति स जीवति॥ ९॥ ★ [३६]

By this or that way a luxurious person also lives, but only he lives who lives for the betterment of others.

जिस किसी प्रकार से कामी व्यक्ति भी जीता है, किन्तु दूसरे के उपकार के लिये जो जीता है, वही (वस्तुतः) जीता है।

Sūkta X.155

१४२. मेधां मह्यमङ्गिरसो मेधां सप्त ऋषयो ददुः।
मेधामिन्द्रश्चाग्निश्च मेधां धाता ददातु मे॥ १॥ ★

The Angirases (have given) me the intelligence; the seven great seers have given (me) the intelligence. Let Indra and Agni (put in me) the intelligence; Let Dhātā put in me the intelligence.

दिव्य अङ्गिरा ऋषियों ने मुझे मेधा प्रदान किया है; दिव्य सप्तर्षियों ने मुझे मेधा प्रदान किया है; इन्द्र और अग्नि भी हमें मेधा प्रदान करें; सबको धारण करने वाले धाता देव मुझमें मेधा धारण करावें।

१४३. मेधां मे वरुणो राजा मेधां देवी सरस्वती।
मेधां मे अश्विनौ देवावा धत्तां पुष्करस्रजा॥ २॥ ★

Let King Varuṇa (put) in me the intelligence; let goddess Sarasvatī (put in me) the intelligence; let the twin gods Aśvins, bearing lotus-garlands, put in me the intelligence.

राजा वरुण मुझमें मेधा धारण करावें; देवी सरस्वती मुझमें मेधा धारण करावें; कमल-पुष्प की माला धारण करने वाले दोनों अश्विनीकुमार मुझमें मेधा धारण करावें।

१४४. या मेधाप्सरसि गन्धर्वेषु च यन्नरे। दैवी या मानुषी मेधा सा मामा विशतादिह॥ ३॥ ★

The intelligence which is in *apsarases* (the heavenly female divinities), in *gandharvas*, (the heavenly rays), and which is in men, and the intelligence which belongs to divine and human beings, may that (intelligence) come to me here.

जो मेधा दिव्य अप्सराओं, गन्धर्वों तथा जो मनुष्यों में स्थित है, जो दैवी तथा मानुषी मेधा है वह यहां मेरे में प्रविष्ट होवे।

१४५. यन्मे नोक्तं प्र द्रवतां शकेयं यदनुब्रुवे।

निशामितं नि शामहै मयि श्रुतं सह व्रतेन भूयासं ब्रह्मणा सं गमेमहि॥ ४॥ ★

Whatever not mentioned here, may that rush unto me; what I have said, may I be able to get that; whatever is learnt, may we perceive that; (whatever is) heard, may that reside in me. May I be accompanied by the sacred vow (*vrata*); may we be accompanied by the sacred prayer (*Brahman*).

जो मैंने नहीं कहा वह मेधा भी मेरे पास आवे; जो मैंने कहा है उस मेधा को मैं धारण करने में समर्थ बनूं; जो कुछ मैंने सीखा है, उसकी मैं अनुभूति करूं; जो कुछ मैंने सुनकर ज्ञान प्राप्त किया है, वह मेरे अन्त:करण में स्थित होवे। मैं पवित्र व्रत से संयुक्त होऊँ; मैं पवित्र ज्ञान के साथ संगमन करूँ।

१४६. शरीरं मे विचक्षणं वाङ् मे मधुमदुहा।

अवृधमहमसौ सूर्यो ब्रह्मण आणी स्थः। श्रुतं मे मा प्र हासीत्॥ ५॥ ★ [१०]

My body is conspicuous; my speech is mead-yielding; I am not old as also is this sun; You are the pins of the *Brahman*; let my knowledge be not lessened.

मेरा शरीर विशिष्ट रूप में दिखने वाला होवे; मेरी वाणी मधु-पूर्ण दूध देने वाली हो; यह मैं कभी वृद्ध होने वाला नहीं हूँ; यह सूर्य भी। ब्रह्म की कील हो; मेरा ज्ञान कभी कम न होवे।

१४७. मेधां देवीं मनसा रेजमानां गन्धर्वजुष्टां प्रति नो जुषस्व।

मह्यं मेधां वद मह्यं श्रियं वद मेधावी भूयासमजराजरिष्णुः॥ ६॥ ★

Make favourable to us the divine intelligence which is ever-shining and loved by e *gandharvas*; speak intelligence for me; speak glory for me. May I be accompanied / intelligence and also be wandering on the path of knowledge never being affected ' old age.

दिव्य मेधा को, जो मन से सदा प्रकाशमान है तथा जो गन्धर्वों द्वारा सदा सेवित है, हमारे लिये

अनुकूल करो। मेरे लिये मेधा की बात करो; मेरे लिये श्री की बात करो; मैं मेधावी बनूं और वृद्धावस्था से बिना प्रभावित ज्ञान के मार्ग पर सदा चलने की इच्छा वाला बनूं।

१४८. सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम्॥ ७॥ ★

I have attained in opulence the intelligence, the Lord of sacrificial assembly, the wonderful, dear to and desired as well by Indra.

मैं यज्ञमण्डप के स्वामी, अद्भुत शक्ति वाले, प्रिय तथा इन्द्र के लिये वरणीय सम्पत्ति मेधा के लिये आया हूँ।

१४९. यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु॥ ८॥ ★

The intelligence which all the gods and forefathers worship, O Agni, with that very intelligence make me intelligent.

जिस मेधा की सम्पूर्ण देवगण तथा पितृगण उपासना करते हैं, उस मेधा से हे अग्नि! आज मुझे मेधावी बनाओ।

१५०. मेधाव्यहं सुमनाः सुप्रतीकः श्रद्धामना सत्यमतिः सुशेवः।
महायशा धारयिष्णुः प्रवक्ता भूयासमग्ने स्वधया प्रयोगे॥ ९॥ ★ [११] {११}

May I be the possessor of intelligence, the possessor of good mind, the possessor of good appearance. May I be of faithful mind, of truthful thought and be gracious. May I be the possessor of greater glory, the possessor (of intelligence), a great orator in debate and equipped in the application of *mantra*s with their magical power.

मै मेधा को धारण करने वाला; सुन्दर मन धारण करने वाला, सत्य बुद्धि वाला, मन में सदा श्रद्धा-भाव रखने वाला, सत्य विचार वाला, शोभन सम्पत्ति वाला, महान् यशस्वी, सम्पूर्ण श्रेष्ठ गुणों को धारण करने की इच्छा वाला, प्रवचन करने वाला तथा शत्रु के प्रति मन्त्र-शक्ति का प्रयोग करने वाला बनूं।

Sūkta X.171

१५१. येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १॥ ★

(The immortal Mind) by which everything is known in this world at present, past nd future; and by which the sacrifice, etc. is performed with the help of seven *ṛtviks*; nay that mind of mine be of auspicious resolution.

जिस अमर मन के द्वारा इस संसार में भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल के सब पदार्थ जाने जाते हैं; और जिसके द्वारा सात होता वाला यज्ञ सम्पादित किया जाता है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५२. येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २॥ ★

(The Mind) through which the dexterous and intelligent men, devoted to the performance of religious rites, do their work in sacrifice and assemblies; which is unpreceded, (which is) capable of performing sacrifices and (which is) present in the body of all living beings; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जिस मन से कर्मनिष्ठ बुद्धिमान मेधावी पुरुष यज्ञ तथा उपासनाओं में कर्म करते हैं; जो सब (इन्द्रियों) से पहले उत्पन्न होता है और यज्ञ करने में समर्थ है; और जो प्राणिमात्र के शरीर के भीतर रहता है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५३. येन कर्माणि प्रतिरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा तानि हन्ति।
यस्यान्वितमनु कृण्वन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३॥ ★

(The divine Mind), through which the wise men perform their work; from which they bring to completion with speech and mind; after association of which the living beings do their work; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जिसके द्वारा बुद्धिमान व्यक्ति अपने कर्मों का सम्पादन करते हैं; क्योंकि वाणी और मन के द्वारा ही उन कर्मों को समाप्त करते हैं, जिसके अन्वित होने पर ही प्राणी सब कार्य करते हैं; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५४. यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ४॥ ★

(The Mind) in which the *ṛks*, the *sāman* (chanting) and the *yajuṣ mantras* are set p like the spokes in the nave of a wheel; and in which all knowledge of living beings woven; may that mind of mine be of auspicious resolution.

रथ-चक्र की नाभि में तिल्लियों की तरह जिस मन में ऋचायें, साम और यजुः मन्त्र प्रतिष्ठित हैं; समें प्राणियों का सर्वपदार्थ-विषयक ज्ञान निहित है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५५. यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ५॥ ★ [२७]

(The Mind) which is an instrument of distinguished knowledge, conciousness and that of steadiness itself; which is an immortal light in living beings (that directs the external organs to their respective objects); and without which no work is done; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो मन विशेष ज्ञान तथा सामान्य ज्ञान (का साधन) है; जो धैर्य-रूप है; जो प्राणियों के भीतर (सब इन्द्रियों को प्रेरित करने वाली) अमर ज्योति है; और जिसके बिना कोई कार्य नहीं किया जा सकता; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५६. सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ६॥ *

(The Mind) which impels living beings to action, and controls them as a good charioteer does the horses; which resides in heart and is never old, and (which) is very swift; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जैसे एक अच्छा सारथी घोड़ों को इधर-उधर प्रेरित करता है और लगामों से उन्हें अपने वश में रखता है, उसी प्रकार जो मन प्राणियों को बार-बार इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है; जो हृदय में स्थित है; जो बुढ़ापा से रहित और अत्यन्त वेगवान् है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५७. यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ७॥ *

(The divine Mind) which goes farther off (than other sense organs like eye, etc.) when one is awake; which comes back in the same way (as it goes away) when one is sleeping; (which is) far-going and which is the sole light of all external organs; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो मन पुरुष की जागृत् अवस्था में (नेत्र आदि अन्य ज्ञानेन्द्रियों की अपेक्षा) अधिक दूर जाता है; जो पुरुष की सुषुप्ति अवस्था में उसी प्रकार लौट आता है जिस प्रकार जागृत् अवस्था में दूर जाता है; और जो सब बाह्य इन्द्रियों का एकमात्र प्रकाशक है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५८. येनेदं सर्वं जगतो बभूव तदेवाग्निं महतो जातवेदाः।
तदेवाग्निस्तपसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ८॥ *

(The Mind) by which the entire world has come out; even the great gods also,

(like) Jātavedas; which itself is that Agni; which is the sole light, the result of penance; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जिसके द्वारा इस जगत् से यह सब उत्पन्न हुआ है, जो जातवेदा अग्नि (आदि) देवता भी महत् से उत्पन्न हुए हैं; तपस् से उत्पन्न जो एक ज्योति है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१५९. येन द्यौरुग्रा पृथिवी चान्तरिक्षं येन पर्वताः प्रदिशो दिशश्च।
येनेदं जगद्व्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ९ ॥ *

(The Mind) by which the great heaven, earth and the mid-region (have come out); by which the mountains, sub-quarters and the quarters (have come out); by which the entire world of the creatures has been pervaded; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जिस से विशाल द्यौ, पृथिवी तथा अन्तरिक्ष (व्याप्त है); जिससे पर्वत, प्रदिशायें तथा दिशायें (व्याप्त हैं); जिससे यह जगत् व्याप्त है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६०. ये पञ्चपञ्चा दशतं शतं च सहस्रं च नियुतं न्यर्बुदं च।
ते अग्निचित्येष्टकात्तं शरीरं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १० ॥ * [२८]

Which are five into five, ten, hundred, thousand, million, and hundred million; they are in the body pervaded in the *agnicityeṣṭakā* (piling of bricks in the *agnicayana*); may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो पाँच-पाँच, दश, सौ, सहस्र, दश लाख, दश करोड़ संख्यायें हैं, वे सभी अग्निचित्येष्टकात्मक शरीर में व्याप्त हैं; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६१. ये मनो हृदयं ये च देवा या दिव्या आपो यः सूर्यरश्मिः।
ये श्रोत्रं चक्षुषी संचरन्ति तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ११ ॥ *

Which is mind, which is heart, which are the gods, which are divine waters, which is the sun-ray, which is the ear, which are the two eyes; may that mind of mine, pervading in all, be of auspicious resolution.

जो दोनों मन और हृदय है, जो देवता हैं, जो दिव्य जल हैं; जो सूर्यरश्मि है, जो दोनों कान और आँख हैं; (जो) इनमें नित्य संचरण करने वाला है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६२. यदत्र षष्ठं त्रिशतं शरीरं यज्ञस्य गुह्यं नवं नावमाद्यम्।
दश पञ्च त्रिंशतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १२ ॥ *

Which is here sixth, the body comprising of three-hundred (?) (limbs), the secret,

new and first boat of the sacrifice; which is ten, five, thirty, and which is above that; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो यहाँ छठा तीन-सौ (अंगों वाला) शरीर है; जो यज्ञ की अत्यन्त गुह्य नवीन एवं प्रथम नौका है; दश-पाँच-तीस तथा इससे जो परे भी है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६३. वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १३॥ ★

I know that great *puruṣa* having the colour of the sun and above darkness; the wise men know his origin; may that mind of mine be of auspicious resolution.

आदित्य के समान वर्ण वाले तथा अन्धकार से परे उस महान् पुरुष को मैं जानता हूँ। उसके मूल स्थान को विद्वान् चारों तरफ देखते हैं; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६४. अचिन्त्यं चाप्रमेयं च व्यक्ताव्यक्तपरं च यत्।
सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरं ध्यानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १४॥ ★

Which is above the contemplation and above the scope of knowledge; which is above the manifested and the unmanifested; which is subtler than subtle for meditation; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो अचिन्त्य है, जो अप्रमेय है, व्यक्त और अव्यक्त से भी जो परे है; सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर है, जो ध्यानमग्न है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६५. अस्ति विनाशयित्वा सर्वमिदं नास्ति पुनस्तथैव धृष्टं ध्रुवम्।
अस्ति नास्ति हितं मध्यमं परं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १५॥ ★ [२९]

(Which) exists even after destroying all this; which is definitely not the same again as seen before; which exists, exists not, and (which is not) placed; which is in middle and above; may that mind of mine be of auspicious resolution.

इस सबको विनष्ट कर के जो स्थित है, किन्तु पुनः उसी रूप में निश्चित ही नहीं है; नहीं है, स्थित है, मध्यम है, उससे परे है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६६. अस्ति नास्ति विपरीतो प्रवादोऽस्ति नास्ति सर्वं वा इदं गुह्यम्।
अस्ति नास्ति परात्परो यत् परं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १६॥ ★

There is contradictory statement whether it exists or does not exist; it exists and does not exist, all this is in secret; which exists and does not exist, and which is greater than great; may that mind of mine be of auspicious resolution.

(वह) है, नहीं है, यह जो विपरीत वचन कहा जाता है, नहीं है अथवा यह सब गुह्य है; वह नहीं है, पर से भी परे है, उससे भी जो परे है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६७. परात्परतरं यच्च तत्पराच्चैव तत्परम्।
तत्परात्परतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १७॥ ★

Which is greater than the great and again greater than that; that should be understood as greater than the great; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो पर से भी परतर है, उस पर से भी जो परे है; उस पर से भी परे जो जानने योग्य है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६८. परात्परतरो ब्रह्मा तत्परात्परतो हरिः।
तत्परात्परतो ह्येष तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १८॥ ★

Brahmā is greater than the great; Hari (i.e. Viṣṇu) is greater than Brahmā; this is again greater than that; may that mind of mine be of auspicious resolution.

पर से भी परे ब्रह्मा है; उस पर से भी परे हरि है, उस पर से भी परे निश्चित ही यह है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो॥ १८॥

१६९. गोभिर्जुष्टो धनेन ह्यायुषा च बलेन च।
प्रजया पशुभिः पुष्कलार्घ्यं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १९॥ ★

Which is adorned with cows (*go*=organs), with wealth, with longevity, with the strength, with progeny, with cattle and which is worthy of adoration by many; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो गायों से, धन से, आयु से, बल से, प्रजा से, तथा पशुओं से प्रसन्न है तथा उससे भी अधिक जो महनीय है; वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो॥ १९॥

१७०. प्रयतः प्रणवो नित्यं परमं पुरुषोत्तमम्।
ॐकारं परमात्मानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २०॥ ★ [३०]

The prolonged *praṇava* is eternal; and the *puruṣottama* is the supreme. The syllable *oṁ* is a great *paramātman*; may that mind of mine be of auspicious resolution.

निरन्तर उच्चरित प्रणव नित्य है, परम पुरुषोत्तम है, ओङ्कार रूप परमात्मा है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो॥ २०॥

(वह) है, नहीं है, यह जो विपरीत वचन कहा जाता है, नहीं है अथवा यह सब गुह्य है; वह नहीं है, पर से भी परे है, उससे भी जो परे है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६७. परात्परतरं यच्च तत्पराच्चैव तत्परम्।
तत्परात्परतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १७॥ *

Which is greater than the great and again greater than that; that should be understood as greater than the great; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो पर से भी परतर है, उस पर से भी जो परे है; उस पर से भी परे जो जानने योग्य है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१६८. परात्परतरो ब्रह्मा तत्परात्परतो हरिः।
तत्परात्परतो ह्येष तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १८॥ *

Brahmā is greater than the great; Hari (i.e. Viṣṇu) is greater than Brahmā; this is again greater than that; may that mind of mine be of auspicious resolution.

पर से भी परे ब्रह्मा है; उस पर से भी परे हरि है, उस पर से भी परे निश्चित ही यह है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो॥ १८॥

१६९. गोभिर्जुष्टो धनेन ह्यायुषा च बलेन च।
प्रजया पशुभिः पुष्कलार्घ्यं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १९॥ *

Which is adorned with cows (*go*=organs), with wealth, with longevity, with the strength, with progeny, with cattle and which is worthy of adoration by many; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो गायों से, धन से, आयु से, बल से, प्रजा से, तथा पशुओं से प्रसन्न है तथा उससे भी अधिक जो महनीय है; वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो॥ १९॥

१७०. प्रयतः प्रणवो नित्यं परमं पुरुषोत्तमम्।
ॐकारं परमात्मानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २०॥ * [३०]

The prolonged *praṇava* is eternal; and the *puruṣottama* is the supreme. The syllable *oṁ* is a great *paramātman*; may that mind of mine be of auspicious resolution.

निरन्तर उच्चरित प्रणव नित्य है, परम पुरुषोत्तम है, ओङ्कार रूप परमात्मा है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो॥ २०॥

१७१. यो वै वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरात्।
यद्बृंहितं तथा वैश्यं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २१॥ ★

Which is verily Gāyatrī in the Veda, etc., all-pervasive even than Maheśavara; which is resounding and overspreading; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो वेदादि में गायत्रीस्वरूप है; महेश्वर से भी अधिक सर्वव्यापी है, जो (ध्वनिरूप में) सर्वत्र गूँज रहा है, तथा सर्वव्यापक है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो॥ २१॥

१७२. यो वै वेदं महादेवं परमं पुरुषोत्तमम्।
यः सर्वं यस्यचित्सर्वं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २२॥ ★

Whosoever knows Mahādeva as Supreme Lord (*puruṣottama*); who is every thing and whose is every thing; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो परम पुरुषोत्तम महादेव को जानता है; जो सब कुछ तथा जिसका सब कुछ है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१७३. योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज ईश्वरः।
अकायो निर्गुणोऽध्यात्मा तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २३॥ ★

He is read in all the Vedas as unborn and *Īśvara*, the Ruler; who is body-less, quality-less, and related to the Supreme *ātman*; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जो वह सभी वेदों में पढ़ा जाता है; जो अजन्मा है, सबका शासक है, शरीर-रहित है, तीनों गुणों से परे है; अध्यात्म रूप है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१७४. कैलाशशिखराभासं हिमवद्गिरिसंस्थितम्।
नीलकण्ठं त्र्यक्षं च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २४॥ ★

(Which is) shining like the summit of the Kailāsa mountain, stationed like the Himālaya mountain, dark-blue-necked and three-eyed; may that mind of mine be of auspicious resolution.

कैलास पर्वत के शिखर के समान प्रकाश वाला है; हिमवान् पर्वत पर स्थित है; नीलकण्ठ रूप है तथा त्रिनेत्र रूप है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१७५. कैलाशशिखरे रम्ये शङ्करस्य शुभे गृहे।
देवतास्तत्र मोदन्ति तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २५॥ ★

(Which resides) at the charming summit of the Kailāsa in the splendid home of Śaṅkara; there all gods enjoy; may that mind of mine be of auspicious resolution.

रमणीय कैलास के शिखर पर शङ्कर के शुभ गृह में (जो निवास करता है), वहीं देवता निवास करते हैं; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१७६. आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
उत्पादितं जगद्व्याप्तं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २६॥ ★

(Which) has created the three *loka*s along with movable and immovable things from Brahmā to a clump of grass, and (which) has pervaded the entire world; may that mind of mine be of auspicious resolution.

जिसने ब्रह्म से लेकर तृणपर्यन्त तीनों लोकों के चर एवं अचर सबको उत्पन्न किया है, तथा सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त है; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१७७. य इमं शिवसङ्कल्पं सदा ध्यायन्ति ब्राह्मणाः।
ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २७॥ ★

The brāhmaṇas, who meditate upon this *Śivasaṅkalpa-sūkta*, will attain the highest salvation. May that mind of mine be of auspicious resolution.

जो ब्राह्मण इस शिव-संकल्प (सूक्त) का सदा ध्यान करते हैं, वे परम मोक्ष को प्राप्त होंगे; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

१७८. त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २८॥ ★ [३१]

We worship Lord Śiva, the three-eyed, full of fragrance, and the enhancer of sustenance. May I get freedom from the death as the watermelon from its stalk, and not from immortality. May that mind of mine be of auspicious resolution.

(अग्नि-विद्युत् तथा सूर्य रूप) तीन नेत्र वाले, सुगन्ध से युक्त, पोषण-तत्त्व को बढ़ाने वाले देव की हम पूजा करते हैं। (हे महादेव) मैं मृत्यु से मुक्त होऊँ जैसे तरबूज (पक जाने पर) बन्धन से (मुक्त होता है), किन्तु अमृतत्त्व से अलग न होऊं; वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

Sūkta X.174

१. यासामूधश्चतुर्बिलं मधोः पूर्णं घृतस्य च।
ता नः सन्तु पयस्वतीर्बह्वीर्गोष्ठे घृताच्यः॥ ५॥ ★

May those cows, whose udder is four-holed, full of honey and clarified butter, full of milk, yielding butter, be in plenty in the cowshed for us.

जिनका चार छिद्रों वाला थन मधु तथा घृत से परिपूर्ण है, वे दूध से भरी घृत प्रवाहित करने वाली गायें हमारी गौशाला में बहुसंख्या में हों।

१८०. उप मैतु मयोभुवः ऊर्जं चौजश्च बिभ्रतीः।
दुहाना अक्षितं पयो मयि गोष्ठे नि वर्तध्वं यथा भवान्युत्तमः॥ ६॥ * [ऋ

Let the cows, yielding enjoyment, bringing strength and yielding imperishable milk, come to me; (O cows) return back to my cowshed, so that I may be supreme

सुख देने वाली, ऊर्जा और बल को धारण करने वाली तथा कभी क्षीण न होने वाले दूध को वाली गायें हमारे पास आवें। (हे गायों) मेरी गौशाला में लौट आवो, ताकि मैं (गोधन रूप सम्पत्ति में) सबसे उत्तम होऊँ।

Sūkta X.189

१८१. नेजमेष परा पत सुपुत्र पुनरा पत।
अस्यै मे पुत्रकामायै गर्भमा धेहि यः पुमान्॥ ४॥ *

O Nejameṣa (a demon inimical to embryo), go away; O good child, come again; (O Viṣṇu,) put embryo, which is a male, in this woman desiring to have a son for

हे (गर्भविरोधक) नेजमेष, दूर जावो; हे (गर्भस्थ) सुपुत्र, पुनः उत्पन्न होवो। पुत्र की कामना करने वाली मेरी इस (स्त्री) में (हे विष्णु) गर्भ धारण कराओ, जो पुरुष है।

१८२. यथेयं पृथिवी मह्युत्ताना गर्भमादधे।
एवं त्वं गर्भमा धेहि दशमे मासि सूतवे॥ ५॥ *

As this great earth lying supinely puts embryo in her, likewise O wife embryo in thy womb for its getting birth in the tenth month.

जिस प्रकार यह उत्तान महती पृथिवी गर्भ धारण करती है, उसी प्रकार (हे स्त्री) दसवें पैदा होने के लिये तुम गर्भ धारण करो।

१८३. विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्याम्।
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे॥ ६॥ *

Put in the groins (*gavini*) of this lady the male child, endowed with the handsome form of Viṣṇu, to be born in the tenth month.

इस नारी की गर्भदानी (गविनी) में विष्णु के श्रेष्ठ रूप से युक्त पुरुष पुत्र को दसवें मास पैदा होने के लिये गर्भ धारण करो।

Sūkta X.192

१८४. अनींकवन्तमूतयेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे। स नंः पर्षदति द्विषंः॥ ६॥ * [५३]

We invoke Agni, occupying the foremost rank, with laudations. May he bring us safe across the enemies.

देवताओं के मुखरूप अग्नि को अपनी रक्षा के लिये स्तुतियों से हम पुकारते हैं। वह हमसे द्वेष करने वाले शत्रुओं को दूर भगावे।

Sūkta X.197

१८५. संज्ञानंमुशनां वदत् संज्ञानं वरुंणो वदत्।
संज्ञानमिन्द्रंश्चाग्निश्चं संज्ञानं सविता वंदत्॥ १॥ *

Let Uśanā speak harmony; let Varuṇa speak harmony; let Indra and Agni speak harmony; let Savitā speak harmony.

उशना (हमारे लिये) संज्ञान (सामंजस्य) बोले; इन्द्र और अग्नि (हमारे लिये) संज्ञान बोलें; सविता हमारे लिये संज्ञान बोले।

१८६. संज्ञानं नः स्वेभ्यंः संज्ञानमरंणेभ्यः।
संज्ञानंमश्विना युवमिहास्मासु नि यंच्छतम्॥ २॥ *

Let harmony (be) for us from kinfolk; let harmony (be) from strangers. O Aśvins, you two establish here harmony among us.

संज्ञान हमारे लिये आत्मीय जनों से होवे; संज्ञान हमारे लिये दूसरे लोगों से होवे। हे अश्विनी वो, तुम दोनों यहाँ हमारे में संज्ञान प्रतिष्ठित करो।

८७. यत्कक्षीवांन् संवननं पुत्रो अङ्गिंरसामवंत्।
तेनं नोऽद्य विश्वें देवाः सं प्रियां समंजीजनन्॥ ३॥ *

The mutual fondness belonging to Kakṣīvān, the son of Aṅgiras, which protects ll), with the same mutual fondness let the Viśvedevā today generate the lovely nging for us.

अङ्गिरस के पुत्र कक्षीवान् का जो संवनन (परस्पर एक-दूसरे को चाहने की भावना) है, वह सबकी रक्षा करता है उसी परस्पर एक-दूसरे को चाहने की भावना से सभी देवताओं ने हमारे लिये प्रिय संवनन उत्पन्न किया है।

१८८. सं वो मनांसि जानतां समाकूतीर्मनामसि।
असौ यो विमना जनस्तं समावर्तयामसि॥ ४॥ *

Let each of you know together each one's minds; we think together the intentions of all. This man who is apathetic to others, we bring him together.

तुम्हारे में से प्रत्येक एक दूसरे के मनों को जाने; हम परस्पर समान उद्देश्य वाला होने के लिये एक साथ चिन्तन करते हैं। यह व्यक्ति जो (दूसरों के प्रति) वैमनस्य की भावना रखता है, उसको हम अपने साथ वापस लाते हैं।

१८९. तच्छंयोरा वृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ५॥ * [५८]

We choose the auspicious gain and removal of the disease; (we choose) for sacrifice a successful completion; we choose for the sacrificer the (fruit of the sacrifices). May there be divine welfare for us; let there be welfare for men; let the medicament go upward. Let the welfare be for bipeds; let the welfare be for quadrupeds.

हम उस कल्याण की प्राप्ति तथा अकल्याण के निवारण के लिये कामना करते हैं; यज्ञ की सफलतापूर्वक समाप्ति के लिये (कामना करते है); यजमान के लिये यज्ञ के सम्पूर्ण फल प्राप्ति की (कामना करते हैं)। दिव्य स्वस्ति हमारे लिये होवे; सम्पूर्ण मनुष्य के लिये स्वस्ति होवे। सभी ओषधियाँ ऊपर की ओर निकलें। हम सबका कल्याण हो; दो पैर वाले (पक्षी-आदि) का कल्याण हो; चार पैर वाले (पशु आदि) का कल्याण होवे।

Sūkta X.198

१९०. नैर्हस्त्यं सेनादरणं परिवर्त्मं तु यद्धविः।
तेनामित्राणां बाहून् हविषा शोषयामसि॥ १॥ *

The oblation which causes (enemies) handless, and destroys their army in the path, going around with that (oblation) I torture the hands of the enemies.

जो हविः चारों तरफ से मार्ग में, शत्रुओं को हाथ-रहित करती है तथा उनकी सेना को नष्ट करती है, उसी हविः से शत्रुओं की भुजाओं को शक्तिहीन बनाता हूँ।

१९१. परि वर्त्मान्येषामिन्द्रः पूषा च सस्रतुः।

तेषां वो अग्निदग्धानामग्निगूळ्हानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम्॥ २॥ *

May Indra and Pūṣan rush upon the (enemies) on all paths from all sides; may Indra kill among them the chieftains of your (enemies), burnt by Agni, and concealed by Agni.

इन शत्रुओं के मार्गों को इन्द्र तथा पूषा चारों तरफ से अवरुद्ध कर आगे बढ़ें। अग्नि के द्वारा जिनको जला दिया गया है तथा अग्नि के द्वारा जिन्हें छिपा दिया गया है, ऐसे तुम्हारे शत्रुओं में से मुख्य-मुख्य को इन्द्र नष्ट करे।

१९२. ऐषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्य भयं यथा।

परां अमित्राँ एजत्ववांची गौरुपेजतु॥ ३॥ * [५९]

(O Indra) tie up the skin of a bull to our shoulders as to the fear of an antelope. Let the enemies go to defeat; the cow come towards us.

(हे इन्द्र) हमारे इन योद्धाओं में वृषभ-चर्म को बांधो, जिससे हरिण की तरह (शत्रुओं में) भय उत्पन्न हो। (इन्द्र) शत्रुओं को पीछे धकेले (जिससे) शत्रुओं का गो-आदि धन हमारे पास आवे।

Sūkta X.199

१९३. प्राध्वराणां पते वसो होतर्वरेण्यक्रतो। तुभ्यं गायत्रमृच्यते॥ १॥ *

O lord of sacrifices and wealth, O *Hotar*, O doer of excellent work, the *Gāyatra Sāman* is chanted for you.

हे यज्ञों के स्वामी, हे सर्वत्र वास करने वाले, हे होता, हे सर्वश्रेष्ठ कर्म करने वाले (इन्द्र), तुम्हारे लिये यह गायत्र साम गाया जाता है।

१९४. गोकामो अन्नकामः प्रजाकाम उत कश्यपः।

भूतं भविष्यत्प्र स्तौति महद्ब्रह्मैकमक्षरम् बहुब्रह्मैकमक्षरम्॥ २॥ *

Kaśyapa, desirous of cow, desirous of grain, and desirous of progeny, prays to the one *akṣara*, the symbol of great *brahman*, one *akṣara*, the symbol of many *Brahman* for past, (present) and future.

गायों की कामना करने वाले, अन्न की कामना करने वाले तथा प्रजा की कामना करने वाले कश्यप एकाक्षर उस ब्रह्म की स्तुति करते हैं, जो भूत, भविष्य (तथा वर्तमान) में महद्ब्रह्मस्वरूप है तथा बहुब्रह्मस्वरूप भी है।

१९३. यदक्षरं भूतकृतो विश्वे देवा उपासते। महत्ऋषिमस्य गोप्तारं जमदग्निमकुर्वत॥ ३॥ ★

The syllable, which all the Devas and the creators of all the beings worship, (they) assigned Jamadagni, the great seer, as a protector of that *akṣara*.

जिस अक्षर ब्रह्म की, सभी प्राणी तथा विश्वेदेवा उपासना करते हैं, उस (अक्षर ब्रह्म) की रक्षा के लिये महर्षि जमदग्नि को नियुक्त किया गया।

१९६. जमदग्निरा प्यायते छन्दोभिश्चतुरुत्तरैः। राज्ञः सोमस्य भक्षेण ब्रह्मणा वीर्यावता
शिवा नः प्रदिशो दिशः सत्या नः प्रदिशो दिशः॥ ४॥ ★ [६०]

Jamadagni causes to increase (this *akṣara*) with metres, increasing by four syllables, with the power of partaking of the king *soma*, and with the vigour of *Brahman*, the prayer. Let the sub-directions and the (main) directions be auspicious for us; let the sub-directions and the (main) directions be truthful for us.

जमदग्नि ने चतुरुत्तर अर्थात् चार की बढ़ती संख्या वाले छन्दों के द्वारा, राजा सोम के भक्षण द्वारा, वीर्ययुक्त ब्रह्म के द्वारा उस (एक अक्षर) को बढ़ाया। सम्पूर्ण दिशायें तथा प्रदिशायें हमारे लिये कल्याणकारी हों; सभी दिशायें तथा उपदिशायें हमारे लिये सत्य हों।

१९७. अजो यत्तेजो ददृशे शुक्रं ज्योतिः पुरोगुहा।
तदृषिः कश्यपः स्तौति सत्यं ब्रह्म चराचरं ध्रुवं ब्रह्म चराचरम्॥ ५॥ ★

The sharpness, the brilliance, the light which Aja, the unborn, saw in the cave beyond, the seer Kaśyapa lauds that *Brahman*, as Truth, moving and unmoving; *Brahman*, as stable, moving and unmoving.

अजन्मा ब्रह्म ने जिस प्रकाशमान, ज्योतिःस्वरूप तेज को सर्वोच्च गुहा में देखा था, ऋषि कश्यप उसकी 'चर-अचर सभी सत्यस्वरूप ब्रह्म हैं', 'चर-अचर सभी ध्रुवस्वरूप ब्रह्म है', उस रूप में स्तुति करते हैं।

१९८. त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
अगस्त्यस्य त्र्यायुषम् यद्देवानां त्र्यायुषं तन्मे अस्तु त्र्यायुषम्॥ ६॥ ★

The three lifespan of Jamadagni, the three lifespan of Kaśyapa; the three lifespan of Agastya, and the three lifespan of gods; may that three lifespan be for us.

जमदग्नि की तीन आयु, कश्यप की तीन आयु, अगस्त्य की तीन आयु तथा देवों की जो तीन आयु है, उन सबकी तीन आयु हमारी होवे।

१९९. तच्छंयोरा वृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये दैवी स्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ७॥ ★ [६१]

We choose welfare and removal of evils; (we choose) the successful accomplishment of the religious rites and the attainment of the fruits for the sacrificer. Let the divine welfare be for us; let the welfare be for all human beings. Let the medicament go upward; let the welfare be for the bipeds; and the welfare for the quadrupeds.

हम उस कल्याण की प्राप्ति तथा अकल्याण के निवारण के लिये कामना करते हैं; यज्ञ की सफलतापूर्वक समाप्ति के लिये (कामना करते है); यजमान के लिये यज्ञ के सम्पूर्ण फल प्राप्ति की (कामना करते हैं)। दिव्य स्वस्ति हमारे लिये होवे; सम्पूर्ण मनुष्य के लिये स्वस्ति होवे; सभी ओषधियाँ ऊपर की ओर निकले; हम सबका कल्याण हो; दो पैर वाले (पक्षि-आदि) का कल्याण हो; चार पैर वाले (पशु आदि) का कल्याण होवे।

Sūkta X.200

२००. विदा मघवन् विदा गातुमनु शंसिषो दिशः।
शिक्षा शचीनां पते पूर्वीणां पुरूवसो ॥ १ ॥ *

O Indra, abounding in wealth (you) know (all); (you) know the directions of the worshippers where (they want) to go. O Lord of all powers, O abounding in riches, instruct us to the ancient paths.

हे धनवान् इन्द्र! तुम (सब कुछ) जानते हो; तुम अपने स्तोता के स्वर्ग-जाने की दिशाओं को जानते हो। हे सम्पूर्ण शक्तियों के स्वामी, हे प्रचुर धन वाले, हमें प्राचीन (सत्यमार्गों) को बताओ।

२०१. आभिष्ट्वमभिष्टिभिः प्रचेतन प्र चेतय।
इन्द्र द्युम्नाय न इष एवा हि शक्रः ॥ २ ॥ *

O knower of all, you make us know with (your) these protections; O Indra, for our divine wealth and for the accomplishment of our desire. Śakra, the powerful, is he indeed.

हे प्रकृष्ट ज्ञान वाले, इन संरक्षणों के द्वारा तुम हमें ज्ञान प्रदान करो; हे इन्द्र, हमारे लिये दिव्य धन के लिये तथा हमारी अभीष्ट इच्छा (की पूर्ति) के लिये। ऐसा ही वह (इन्द्र) शक्तिशाली है।

२०२. राये वाजाय वज्रिवः शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे।
मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस आ याहि पिब मत्स्व ॥ ३ ॥ *

O holder of the thunderbolt, O most powerful, O possessor of the thunderbolt, you make me competent to have wealth of knowledge and the wealth of (mental)

power. O possessor of the thunderbolt, you fulfil our desires; come, drink (the *soma*) and be rejoiced.

हे वज्र धारण करने वाले, हे सर्वशक्तिमान, हे वज्रधारण करने वाले, तुम (आध्यात्मिक ज्ञानरूप) धन के लिये, तथा (मानसिक) बल के लिए हमें सुसज्जित करते हो, पूजनीयों में श्रेष्ठ हे वज्रधारण करने वाले, तुम (हमारे) अभीष्ट को पूर्ण करते हो; आवो (सोम का) पान करो तथा आनन्दित होवो।

२०३. विदा राये सुवीर्यं भुवो वाजानां पतिर्वशाँ अनु।
मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे यः शविष्ठः शूराणाम्॥ ४॥ ★

(O Indra) you know the vigour (required) for wealth; you be our lord of all kinds of wealth; (all are) under your control : Most adorable, O possessor of Vajra, fulfil our desires.

(हे इन्द्र,) तुम (आध्यात्मिक ज्ञानरूप) धन के लिये अपेक्षित बल को जानते हो; तुम सभी प्रकार के धन के स्वामी बनो; सभी तुम्हारे वश में हैं। जो शूरवीरों में अधिक बल वाले हो, वह तुम हे वज्रधारण करने वाले, हमारे सभी अभीष्ट को सिद्ध करते हो।

२०४. यो मंहिष्ठो मघोनां चिकित्वाँ अभि नो नय।
इन्द्रो विदे तमु स्तुषे वशी हि शक्रः॥ ५॥ ★ [६२]

You who are the the most adorable among the possessors of wealth, the knower of all, lead us to that (wealth). Indra knows that; I verily laud him. Śakra, the powerful, is indeed the controller (of all).

जो धनियों में सबसे अधिक पूजनीय तथा सबको जानने वाले हो, वह तुम (हे इन्द्र,) उस (धन) की ओर ले चलो। इन्द्र उसको जानता है; मैं उसकी स्तुति करता हूँ। शक्र जो सर्वशक्तिमान है, वह निश्चित ही सबको वश में रखने वाला है।

२०५. तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम्।
स नः पर्षदति द्विषः क्रतुश्छन्द ऋतं बृहत्॥ ६॥ ★

We invoke him, the conquerer, and (himself) not to be conquered. May he bring us through the haters; He is the *Kratu-chandas*, the power covering all; he is the great *ṛta,* the Eternal Cosmic power.

उस सबको जीतने वाले तथा स्वयं किसी के द्वारा न जीते जाने वाले इन्द्र को अपनी रक्षा के लिये पुकारता हूँ। वह (इन्द्र) हमें हमारे द्वेष करने वालों से पार करे; वह (इन्द्र) सबको आच्छादित करने वाला क्रतुच्छन्द है; वह महान् ऋत अर्थात् सबका संचालन करने वाला गतिशील तत्त्व है।

२०६. इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारमपराजितम्।
स नः पर्षदति द्विषः स नः पर्षदति स्त्रिधः॥ ७॥ *

We invoke Indra, the conquerer of all and (himself) unconquered (by any one). May he bring us through the haters, may he bring us through the injurers.

धन की प्राप्ति के लिये सबको जीतने वाले तथा स्वयं किसी के द्वारा पराजित न होने वाले इन्द्र का आह्वान करता हूँ। वह हमसे द्वेष करने वालों से हमें पार करे; वह हिंसा करने वालों से हमें पार करे।

२०७. पूर्वस्य यत्ते अद्रिवः सुम्न आ धेहि नो वसो।
पूर्द्धि शविष्ठ शश्वत ईशे हि शक्रः॥ ८॥ * [६३]

O armed with thunderbolt, what is in your favour the previous wealth, give it to us. O wealthy one, O most mighty one, fill us in abundance. Śakra, the powerful verily rules over all.

हे हाथ में वज्र धारण करने वाले (इन्द्र), जो तुम्हारे हाथ में, पूर्व का धन है, हे धनवान, वह हमें प्रदान करो। हे सबसे अधिक बलवान इन्द्र, हमें धन से परिपूर्ण करो। सबसे अधिक शक्ति वाला इन्द्र निश्चित ही सबका शासक है।

२०८. नूनं तं नव्यं संन्यसे प्रभो जनस्य वृत्रहन्।
समन्येषु ब्रवावहै शूरो यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयाः॥ ९॥ *

O powerful one, O killer of Vṛtra, I put before you what is new with me. We speak together among others. The hero, the friend, the very gracious one without the second, who goes among the cows (waters).

हे प्रभो, हे वृत्रहन्, निश्चित ही जो कुछ नवीन (धन) है वह मैं सम्यक् प्रकार से तुम्हें समर्पित करता है। हम दोनों अन्यों में एक साथ बोलें। जो शूर है, सखा है, सुन्दर सुख प्रदान करने वाला है तथा अपने समान कोई दूसरा वाला नहीं है, वह गायों (जलों) में जाता है।

२०९. एवा ह्येऽ३वा। एवा ह्यग्ने। एवा हीन्द्र। एवा हि पूषन्। एवा हि देवाः॥ १०॥ *

Thus is he like this, thus (you are) O Agni; thus (you are) O Indra; thus (you are) O Pūṣan; thus (you are) O gods.

निश्चित ही वह ऐसा ही है; ऐसा ही हो तुम हे अग्नि; ऐसा ही हो तुम हे इन्द्र; ऐसा ही हो तुम हे पूषन्; ऐसे ही हो तुम लोग हे देवो।

२१०. एवा हि शक्रो वशी हि शक्रो वशाँ अनु।
आयौ मन्याय मन्यव उपौ मन्यायं मन्यव उपो हि विश्वथ॥ ११॥ ★

Thus is the Śakra, verily Śakra is the controller. All are after him. O Āyu, the life, for favour and for wrath you abide near; for favour and for wrath you abide near and everywhere.

ऐसा ही वह शक्र है; सबको वश में करने वाला है; अन्य सभी उसके पीछे है; हे आयु सम्मान के लिये या क्रोध के लिये हमारे समीप रहो; सम्मान के लिये या क्रोध के लिये हमेशा तुम हमारे साथ ही हो और सर्वत्र हो।

२११. अग्निर्देवेद्धः। विदा मघवन् विदोम्॥ १२॥ ★

Agni is enkindled, O Maghavan you know, you know.

अग्नि देवों के लिये प्रज्वलित हुआ है। हे मघवन तुम जानते हो।

२१२. ॐ नमो ब्रह्मणे नमोऽस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि॥ १३॥ ★ [६४] {१२}

Our salutation to *brahman*; salutation to Agni; (salutation) to the Earth; salutation to the herbs; salutation to Speech; salutation to the Lord of speech; I offer my salutation to the great Viṣṇu.

ब्रह्म को नमस्कार है; अग्नि को नमस्कार होवे; पृथिवी को नमस्कार होवे; ओषधियों को नमस्कार; वाणी को नमस्कार; वाचस्पति को नमस्कार; विष्णु को नमस्कार; महान् विष्णु के लिये नमस्कार।